

श्रीमते

रामानन्दाचार्याय नमः

पञ्च पल्लव पदावली

(जल बिहार-बिजयदशहरा-साँक्षी-रास-दीपावली

एवं

युगल झाँकी के संगृहीत पद)

सम्पादक

स्वामी मैथिलीशरणाचार्य 'वेदान्ती'

(प्राप्त स्वर्णपदक)

श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः

य

पञ्च पल्लव पदावली

(जल बिहार-विजयदशहरा-साँझी-रास-दीपावली

एवं

युगल झाँकी के संगृहीत पद)

सम्पादक

स्वामी मैथिलीशरणाचार्य 'वेदान्ती'

(प्राप्त स्वर्णपदक)

पक

सजी शास्त्री

जा)

ताकुण्ड

प्रथम संस्करण

दीपावली २०४१

न्यौछावर—६.०० छः रुपया

मुद्रक

रत्ना प्रिंटिंग वर्क्स

कमच्छा, वाराणसी

अकारादि क्रम से पद-सूची

पद	पृष्ठ संख्या	पद	पृष्ठ संख्या
‘अ’			
अरे रामा भादो के महिनवाँ	९	आजु बनि ठनि आई जनक लली	४६
अवधपुर सरस दशहरा	११	आजु बनि ठनि ठाढ़े राजकिशोर	४७
अवध छयल छवि दृगन	३७	आजु लली बनि आई मेरी	५८
अवध सोहावनो सांझी	७७	आजु यह सांझी भली बनियां	७७
अब हम भई सोहागिन	९४	आहाँक कृपा विनु सुनु सिय	८९
अलि छवि देखु शरद की	४०	‘उ’	
अलि मधि नटत झमकि	६१	उमगि रस रास दोउ नृत्य	६६
अलि अजब अनूप दिवाली	७९	‘ए’	
अलिन मधि लली लाल नटन	६०	एहन पतित केर अहीं पति	८८
अति छवि जनक लली की	८०	ऐसोइ मन चाहत निशिवासर	१०२
अनोखे छैला मारी हमहि	१००	‘क’	
अँखियन बिच तुमको चुराय	१०३	कनक पीठ राजत पिय प्यारी	११
‘आ’		करत दोउ अरस परस शृङ्गार	३०
आज तो विजय तिथि	११	कर धरि सिया नटे पिया मुख	५८
आज सिय संग पिय रास	२९	किशोरीजी राखि शरण मोहि	८४
आज जनकदुलारी रस रंगन	४७	किशोरीजू के अनुपम रसमय	८५
आज शरद रैन गोरी झमकत	५६	‘ख’	
आज महा छवि रंग भवन की	७४	खेलत नैहरे नवारी लाल	१
आज दिवाली दिन सुखकारी	७९	खेलत नाव नावरी रघुवर	३
आज है सखि रैन दिवाली	७९	खेलत नाव नवारी श्याम	८
आज सखी रास मण्डल रास	४१	‘ग’	
आजु सखी लखु रास मण्डल	४२	गजब तोरी चितवनि अवध	९७
		गोरे से बदन पर श्याम	१०१

पद	पृष्ठ संख्या	पद	पृष्ठ संख्या
'घ'		झिझरी खेलि रहे सरयू में	५
घूँघरवारी अलक हिय हर	९६	'ठ'	
'च'		ठाढ़ो रे प्रमोदबन अवध	१००
चलु सखी साँझी निर्मए	१७	'त'	
चलो सखि दीप महल छवि	७८	तेरी चितवनि मोही राजकुमार	४४
चित चोरन छवि रघुवीर	९६	तोहें राखौं पियरवा मैं केहि	१०२
'छ'		'द'	
छवि अति बाँकी हमारे हिय	९६	दीप महल राजत सिय बल्लभ	७७
छयल तेरी छवि की गयल में	१०२	देखु सखी बन्यो राम विहारी	३१
छूम छननन पग नूपुर बाजे	५२	देखु सखी अवधेश सुवन	४६
छूम छननन छाये रही नटनि	५२	देखु सखी भलि रैन दिवारी	७६
छूम छननन धुनि छाये रही	७०	देखो सखि शरद रैन सुन्दर	१५
छूम छननन धुनि छाये रही	७०	देखो सखी आवत रास विहारी	३२
छैला की मधुर बानी जादू	६३	देखो सखि अति अनन्द रास	३४
'ज'		देखो सखि आजु रास मण्डल	४१
जनकलली को पूजत हट री	७५	देखो सखि नटत झमकि दोउ	६१
जय जय श्रीवन प्रमोद रसिकन	२५	देखो देखो री नटनि पिय	६५
जय श्री सीय पद पिय धूरि	८१	देखो री छवि राम बदन की	९३
जल में विहार करत पिय प्यारी	९	दोउ मिलि करत वारि विहार	२
जानकी छवि की मैं बलिहारी	८४	दोउ जल विहरन हेतु चले	३
जिय मारो पियरवा की माधुरी	९५	दोउ नटै झमकि झमकाने	६०
जिय मानत नाहीं चुभे नैना	१०३	दोउन की अरुझनि आली	१००
जिया परिगै नयन के फेरे में	९१	दृगन भरि छवि लखु सिय	९७
जुलुफ तेरी कारी मारि डारी	५९	'ध'	
'झ'		धन्य सिय मोहनि तेरी भाग	१८
झमकि झमकि लली लाल की	५६	धनुहियां वारो श्याम हमारो	९०
झमकि झमकि नटे लाल अरु	६१	धिधिकट धिधिकट बाजे	३८

पद	पृष्ठ संख्या	पद	पृष्ठ संख्या
'न'		नैन दोउ जहर बुझी तरवार	९९
नई नई बधूटी आनि जुरी	४०	'प'	
नटत राम नागर नागरिया	३१	परस्पर पिय प्यारी करत	३८
नटत नवल दोउ रंग भरे	३९	पिया प्यारी नटनि में पायल	५७
नटत रसिक सिरताज रंगीलो	५१	पिया के संग में सिय नटन	६०
नटत सियाजू पिया लेत	५५	पिया बाँधी कटारी तैने आँखन	९१
नटत छवीले छैला सिया मन	५५	पिया प्यारे के नैना बड़े	९५
नटत दोउ लली लाल रस बस	६२	पिया हिया लागी रहो न्यारे	९८
नटति रघुनायको रास रस	२४	प्रियाजू के नैनन की बलिहारी	५२
नटनि अवलोकि अवधेश नृप	५३	प्रियाजू के नेह भरे दोउ नैन	८५
नवल साँझी सखि आजु बनाई	२०	प्रीतम तोरे नैना हो मेरो	९४
नवल रसिया नव साँझी बनाई	२१	प्यारी तेरे नयना मदन सर	२८
नवल रस रास में नवल शोभा	२८	प्यारीजू के चन्द्रिका में चन्दहूँ	५७
नाचत नट नागर सुख सागर	३७	प्यारीजू मुसुकनि में कछु कीन	५९
नाचत रघुवर जनक लली री	५४	प्यारीजू की तिरछी नैना	६२
नावरी खेलिये महाराज प्रेम	३	प्यारी तेरे नैना में अजब टोना	६४
निज कर ते साँझी रचि प्यारी	२०	प्यारी नवल तन सुकुमार	६८
निजकर प्यारी साँझी बनाई	२०	प्यारी रही चन्दहिं हेरि	६९
निरखत साँझी प्रीतम प्यारी	१५	प्यारी लागे छयल की छमकन	७२
निरखु सखि दीपन की छवि	७८	प्यारीजू तिहारी चन्द्रानन पर	८७
निरत करत नवल छैल नचति	६६	प्यारी लागे वो ललन तेरे	९१
निरतत रसिक रसिकनि संग	६७	प्यारे मुखचन्द विलोकहु सजनी	२८
निरमोहिया से लागी लगनियाँ	९२	'ब'	
निहारे विनु ना माने नेही	१०१	बढ़ौ नित जनकलली को भाग	८०
नीर जान राजत रघुराई	२	बनि ठनि नाचत हैं रघुराई	३२
नृत्यत रास रसीली सजनी	४९	बने रहो नीके रहो मेरे प्यारा	१०३

पद	पृष्ठ संख्या	पद	पृष्ठ संख्या
बसो मेरे नयनन में सियलाल	९३	मोहि तो भरोसो सियाजू	८७
बसो यह सियरघुवर को ध्यान	९४	मोहे छैला ने मारी नजरिया	१०४
बहिन पर भैया करे बिहार	८	‘य’	
बालम तुव नैना अति नीके	१००	यह छोटे ऐसे छैला के कहर	६३
बिजयहित दश हथियार सुसाज	१२	यह जनकलली को ध्यान है	८३
बिविध सुमनमय साँझी बनावत	१६	युगल छवि आजु न कछु	१२
बिनु देखे नयनवां ना माने हो	९५	युगल छवि आजु अनूप बनी	९२
बिहँसि मोहि मारी नैन कटार	१००	युगल छवि देखे नयन सिरात	९२
बेसरि हलनि पर मैं तो	६३	युगल छवि जोहन जोग अली	९६
बैठे निरखत सरयू तरंगे	४	ये छवि पर वारौं अमितवर	९०
बोलनि ललित लड़ैती जू की	८२	‘र’	
‘भ’		रघुनन्दन अरु जनक कुमारी	१७
भादो में जल बिहार की क्या	५	रघुकुल कमल विभाकर	२४
भादो में जल बिहार की कैसी	६	रमत रास रस रहसरंगीलो	५१
‘म’		रमत सिय दूलह रास नवीनो	७२
मन मोहे राम प्यारे की रसीली	४०	रसिक दोउ साँझी देखन लागे	१९
मनि भूमि पर लगे नचन	३५	रसिक दोउ निरतत रंग भरे	४१
मधु रसवा चुवै तेरी आँखन में	९१	रसिक दोउ होइ रहे चन्द	१०४
मारे कलेजे हँसि के तेरे नयना	९९	रसे रसे नौका को चलावो	७
मिलि साँझी निरखत पिय प्यारी	२१	राघो जू थारे नैना जादू भरे	४४
मीठी तान सुनादे सुघर बलमां	५१	राघो जू थारे नैनन की न	४५
मेरी आली कित गयो श्याम	३९	राघोजू थारे नैना जुलुम करे	४५
मेरो एक आली दीजै साँचे नेह	५५	राजकुँवर मन मोहि लियो	४५
मो मन मृग को फाँसि लियो	७०	राजत रास मण्डल रघुलाल	४३
मो पै रस की चितवनि डारी	९०	राजत पिय रस रंग भरे	४८
मोहनी रामरसिक की बीन	३८	राजति सिय रस रंग भरी	४८

पद	पृष्ठ संख्या	पद	पृष्ठ संख्या
रास रसिक निरतत रंग भीनो	५२	‘स’	
रास मण्डप मध्य सोम श्रवण	५४	सइयाँ मेरे चाल चलै लटपटिया	५४
रास महँ खेलत कन्दुक खेल	६९	सखि विजय दशहरा आजु री	१३
रैन दिन हिय कसकत है	९८	सखि आरती करै रस प्रेम भरी	३३
रैन दिवाली की दुति नीकी	७६	सखि जकि रही निरखत रास	६८
‘ल’		सखि आई रसीली शरद रतिया	७२
लखु सखि करत युगल जल	८	सखि रैन दिवारी प्यारी	७७
लखु भामिनि भली यामिनि	४०	सखिन बिच नृत्यत युगल	२५
लखु आरती युगल किशोर की	४९	सखिन बिच निरतत रामगोपाल	४४
लगत विजय सुभ साज सजाई	१४	सखिन मधि राजति जनकलली	८०
लगन लगी जब कौन डरै डर	९३	सखिन संग विहरत नवल	७१
ललन दोउ मोद विनोद भरे	१४	सजनी विलोकु आज आनन्द	७
लाल की अलकैं अतर भरी	९९	सजनी रजनी लसत लुनाई	७५
‘श’		सजीवन जीवन युगल किशोर	९२
शरद पून विमल चन्द विमल	३३	सदा मंगल सदा मंगल सदा	७२
शरद सोहनी रैन अली री	५०	सब प्रेमिन समाज साजि नौका	७
शरद की रैन में नटत लली	५७	सब गुण खानि हमर छथि	८८
शरद रितु रतियां सुभग	६५	सरयू में करते विहार	९
शरद निशि उदय सु युगल	६५	सरस साँझी सुभग सखिन	१५
शरद विधु चय विजित वरानन	३९	सियवर छवि अवलोकु अली री	४८
श्याम सुन्दर मन मोहन प्यारे	६४	सिय छवि बरनि सकै कहु कौन	८०
श्यामा श्याम की बलिहारि	४	सियाजू साँझी साँझ बनाई	१७
श्रमकन मुख सोहैं कमल	३५	सियावर सीता प्यारी की	७३
श्रम वस सिथिल झलकत	६९	सियाजू मोहि भरोस तिहारो	८१
श्री सरयू बिच विमल विहारें	१	सियाजू के अरुणारे दोउ तरवा	८२
श्री सरयू तट वन अशोक मधि	२६	सियाजू रानिन में महारानी	८३

पद	पृष्ठ संख्या	पद	पृष्ठ संख्या
सिया जू की सर करि सकत	८४	साँझी अद्भुत सियजू बनाई	१८
सियाजू के दृग छवि नित्त	८५	साँझी झाँकी अलिन रचावति	२२
सियाजू सुख की खानि	८९	साँझी शरद विलास की सखि	२३
सिंहासन राजत सिय रघुवीर	३३	साँवरे सलोने जू झमकि झुकि	५६
स्रीताराम रास करत सरयू	५३	साँवरे सलोने जू सों नैना	९७
सुभग दशहरा चौक विराजे	१३	साँवलिया तेरे जुलुफै जुलुम करै	६२
सुभग दशहरा चौक नवल दोउ	१३	साँवला नैन बान मारा कैसे के	६४
सुन्दर साँझी लाल बनायो	२१	साँवरो रस के भरे तोरे नैन	१०३
सुन्दर साँझी लखो री बीर	२२	‘ह’	
स्वामिनी पद पंकज की ओर	८८	हमारी हो स्वामिनि सिय जू	८१
स्वामिनी तोर सुहाग मनाऊँ	८२	हमारी स्वामिनी वह हैं जो	८६
स्वामिनी सियजू हमारी	८६	हमारी सिया सुन्दरता की	८६
साँवलिया प्यारे काहे के बजावत	५९	हमारे माई जनकलली जू	५०
साँवलिया तेरी कहुर करै	९९	हमारे दृगन वसे रघुवीर	९८
साँवलिया के नैन किधौं शमशेर	१००	हे नटत नट नागर	७१
साँवलिया में तोरे रंग रंगि गई	१०१	हे रघुवर राजकिशोर तनक	१०४
साँझ समय सानन्द विलोकन	१८	होड़ मची है पिय प्यारी में	२३
साँझ समय रघुवीर पुरी की	७४	हौं सहचरि मिथिलेशलली की	८७

॥ श्रीमन्मैथिलीमुखचन्द्र चकोराय नमः ॥

॥ श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः ॥

॥ श्रीयुगलप्रियाशरणाय नमः ॥

पञ्च पल्लव पदावली

जलविहार (शिशरी)

पद १

खेलत नैहरे नवारी लाल ।

श्रीसरयू परिखा मिलि आई, पूरब कोट के नाल ॥

मधुर मोरपंखी ता ऊपर, बैठे युगल कृपाल ।

चमर छत्र विजनादि करहिं अलि, छबि लखि होत निहाल ॥

पूरब तट प्रमोदवन कुञ्ज ते, निरखहिं अलि छवि जाल ।

आनि फँदे दृग मीन सबनि के, 'युगलप्रिया' सुविशाल ॥

पद २

श्रीसरयू बिच बिमल विहारें ।

प्रीतम प्रिया सपरिकर सुन्दर, करत उछाह हजारें ॥

नाना रङ्ग जटित मुक्तामणि, नाव अनूप अपारे ।

अमित भाँति कल कान्ति कलातित, घूमन माँझ सँवारे ॥

पुरवासी सानन्द विलोकहिं, लीला ललित उदारे ।

ह्वै रह्यो गान तान नृत्यादिक, रसिक जनन हितकारे ॥

नवल नैनजा नीर निहारहिं, परसि सनेह सुधारे ।

जय जय धुनि परिपूरि रह्यौ तिन, सुमन सुवृष्टि बहारे ॥

जल विहार करि आय सुखद तट, दिये बहु दान पियारे ।
 'युगलअनन्यशरण' झूलन मधि, मच्च्यौ मौज मनि वारे ॥

पद ३

दोउ मिलि करत वारि विहार ।
 जनकजा श्रीलाल दशरथ, मुदित मन रिझवार ॥
 कनक रत्न सु जड़ित आसन, वदन वसन सु प्यार ।
 नीलमणि मिलि कनक झलकहि, सुमन भूषण धार ॥
 चलत सरस सुगन्ध महकत, पड़त वारि फुहार ।
 निरखि छवि सखि सकल हरषित, जयति वचन उचार ॥
 विबुधगण गुण विमल गावहि, वरषि सुमन अपार ।
 जयति 'रसिकविहारी' रसिका, दास मधुराधार ॥

पद ४

नीर जान राजत रघुराई ।
 सियजू सहित भीर अलिगन की, सुखमा अति सरसाई ।
 मणिमय घाट विशाल सरोवर, विकसे कंज निकाई ॥
 शीतलमन्द सुरभि बह मारुत, चहुँदिशि महल सुहाई ।
 चन्दन पोत उदोत मनिनमय, यूपावलि रुचिराई ॥
 अति विचित्र पिधान चँदोवा, झालर ध्वज छवि छाई ।
 ललित शिखर पर कुम्भ विराजत, छज्जे परम सुहाई ॥
 बिछे बिछौना मृदुल मनोहर, मध्य सिंहासन भाई ।
 तापर बैठे सिय रघुनन्दन, अलिगन गान सुहाई ।
 अगनित बाजे बजत करत अलि, नृत्य मनोहरताई ॥

सर बिच बँगला चित्र तहाँ दोउ, उतरे अलि समुदाई ।
‘रसिकअली’ सजि नव पट अंगन, बैठे अटा पर जाई ॥

पद ५

दोउ जल विहरन हेतु चले ॥
नौकारूढ़ समाज सखीजन, सब सामान भले ।
गान तान सनमान सोहावन, पावन प्रेम पले ॥
सरजू देखि सिया रघुवर, गलवांही रङ्ग रले ।
अति उमङ्ग सों रङ्ग ढंग लहि, तरल तरङ्ग तले ॥
भादव भल भावन हरिवासर, शुक्ल सोहाग फले ।
नाव नावरी खेल खेलारी, जानकिवरहि मिले ॥

पद ६

खेलत नाव नावरी रघुवर ॥
सीय समेत सखी सुख राजत, साजत भूषण वसन तरह तर ।
ध्वजा रङ्गीन पताका फहरत, लहर लेत श्रीसरजू ऊपर ॥
बिछे बिछावन अति मनभावन, नाचत गावत जयति जयति कर ।
लूट लुटावत रंग बरसावत, लाल रतन बहु बरषत मनभर ॥

पद ७

नावरी खेलिए महराज, प्रेम बरस बरसाये ॥
नौका सुभग सनेह सोहावन, अङ्ग-अङ्ग प्रीतम छबि छावन,
सुन्दर लाल लली मनभावन, यह सुख देखना हो राज ॥
सरजू रङ्ग उमंग न थोरो, कहूँ घटा कहूँ चन्द उँजोरी,
अद्भुत रङ्ग मच्यो चहुँओरी, सुख से खेलना हो राज ॥
तरह तरह के रङ्ग रङ्गीले, कहूँ लाल कहूँ पीत रसीले,

मेघ श्याम कतहूँ चटकीले, सरजू कूलना हो राज ॥
 राजदुलारे जनकदुलारी, करत परस्पर खेल अपारी,
 भीगे पिय पट सारी प्यारी, निरखि निरखि कै सखि बलिहारी,
 प्रीतम भूलना मति राज ॥

पद ८

बैठे निरखत सरजू तरंगे ।
 लली लाल अलि अवलि भली विधि, सुभग समाज सुसंगे ।
 मोदवन्त सद सन्त सु सज्जन, वृन्द सजे रस रंगे ।
 प्रेम वारि बिच सु छवि निहारत, श्याम गौर दुति अंगे ॥
 दरस परस मज्जन सु पान करि, होत महा भव भंगे ।
 राम अयन रामायन पेखो, रामहि वचन प्रसंगे ॥
 सिय पिय अमल कमल रसमाते, रसिक जनन मन भृंगे ।
 'जुगलविहारिनि' नाव नावरी, खेलत भरे उमंगे ॥

पद ९

श्यामा श्याम की बलिहारि ।

भई सुरुचि जल सरयू विहरैं, खेलैं नाव नवारि ॥
 नभ सघन घन वन सु छायो, स्वच्छता वर वारि ।
 सजि सु नाव सिंहासनोंपर, सोहे प्रीतम प्यारि ॥
 श्रीचन्द्रकला चन्द्रा चन्द्रानना, सकल साज सँवारि ।
 जस श्रीजानकि जान सखि, जलयान गान सुधारि ॥
 नाव नाव मिलाव छिन पल, भल सु लेहु विचारि ।
 'जुगलबिहारिनि' पर अपर सब, मत मतान्तहि वारि ॥

पद १०

झिझरी खेलि रहे सरयू में सिय संग अवधविहारी ना ।
 रतन खचित मणि नाव बनी है, छज्जे में चाँदनी तनी है,
 फर्श मखमली छटा छनी है, मनहर बूटेदारी ना ॥
 विमल सलिल सरयू सरि सोहैं, विविध रङ्ग पङ्कज मन मोहैं,
 भ्रमर गान सुनि विहंग नटो हैं, दादुर धुन सुखकारी ना ॥
 चहुँदिशि रंग रंगीली बाला, कोउ लिये पान इत्र कोउ माला,
 मध्य सिंहासन पै सियलाला, मनसिज रति मद हारी ना ॥
 कोउ सखि बीन बजावै गावै, लली लाड़िले के मन भावे,
 'कान्तिलता' रससिन्धु समावै, अवसर की बलिहारी ना ॥

पद ११

भादो में जल बिहार की क्या धूम मची है ।
 सामा है रास रंग के औ नाव सजी है ॥
 फहरा रही है सैकड़ों खुश रंग झंडियाँ ।
 लहरा रही है सरयू क्या आनन्द भरी है ॥
 शबनम के बचाने के लिये चाँदनी उज्ज्वल ।
 सुवरन के चमकदार सितूनों पै तनी है ॥
 पड़ती है झलक आव में रंगी फनूस की ।
 होता है गुमां जल में गोया आग लगी है ॥
 गाती है मधुर स्वर से सखी राग रागिनी ।
 खुश होके कह उठे है सियावर की सही है ॥
 आने लगी हरसू से सदा वाह वाह की ।

श्रीचन्द्रकला प्यारी की जब बीन बजी है ॥
 मुसकाते हैं रघुबीर सिया दे गले बहियाँ ।
 प्रीतम भरे सनेह प्रिया प्रेम पगी है ॥
 रघुबर लिये पिचकारी हजारा भरी गुलाब ।
 बरसाते इस तरह मानो सावन की झरी है ॥
 दंपति की छटा माधुरी लखि अंग की 'सुन्दर' ।
 परिकर है शादमान खिली दिल की कली है ॥

पद १२

भादो में जल विहार की कैसी बहार है ।
 घाटों पै सजी नाव की लम्बी कतार है ॥
 छिटकी है चाँदनी कभी काली घटा छाई ।
 तेजी से बह रही श्रीसरयू की धार है ॥
 खेलेंगे नाव नावरी रघुबीर सिया आज ।
 सुनि दरसकों की भीड़ लगी बेशुमार है ॥
 आये रँवा की धार के पोशाक लली लाल ।
 बैठे हैं गले बाँह दे शोभा अपार है ॥
 आई भरी उमंग सिया प्यारी की सखियाँ ।
 सज धज निराली आज अनूठा सिंगार है ॥
 गाती है नाचती है भरी शान में सखियाँ ।
 कोई बजावे वीन को कोई सितार है ॥
 दम्पति सने सनेह में रस रंग के माते ॥
 'सुन्दर' युगल किशोर पै तन मन निसार है ॥

पद १३

सजनी विलोकु आज आनन्द अपार है ।
 सिया रघुरैया करें नौका पर विहार है ॥
 तोरन बितान ताने बाँधे बन्दनवार है ।
 दम्पति की दिव्य ज्योति जागैं जगमगार है ॥
 दरसक गण निज निज नावन सवार है ।
 झूमि झूमि झाकैं सब झाँकी मजेदार है ॥
 सुरन विमानन से निरखैं बहार है ।
 सुमन बरसि 'मोद' करें जय जयकार हैं ॥

पद १४

सब प्रेमिन समाज साजि नौका की सु साज,
 आज झिझरी खेलैवै सिय पिय प्यारे को ॥
 करि सोरहो शृंगार, सारे अवध की नारि, झाँकै झाँकी मजेदार ॥
 सब जलचर वृन्द, छवि छाकि सुखकन्द, कोउ टरत न टारे ॥
 बहु यन्त्रणि को धार, गावैं स्वरनि सम्हार, अति माधुरी अपार ॥
 निशि चाँदनी बहार, नभ गावैं सुरनार 'मोद' माचैं जय जयकार ॥

पद १५

रसे रसे नौका को चलावो राम रसिया ।
 डगमग करै क्यों अनारी अवधेशिया ॥
 अति सुकुमारी सिय प्यारी जू हमारी प्यारे,
 तरल तरङ्ग चले सरयू की तीव्र धारे,
 रोको रोको प्यारे ना तो हो जैहौ अयशिया ॥

चतुर चूड़ामणि गिराय पाल रोक डारी,
अतिहि उमङ्गि प्राणप्यारी जू को अङ्कधारी,
मारे 'मोद' कलिका पै सिहरनि असिया ॥

पद १६

बहिन पर भैया करें बिहार बावा लूटैं बहार मुदित अति देखत
देखनहार ॥ बहिन उर उमगी परम उमङ्ग, छनहिं छन तरपै
तरल तरंग, अनुजहूँ अङ्गनि छायो रंग, आनन्दित सबहि संगनि
संग, महामुद पावै डंटामार ॥ निरखि सिय सहचरिया बलि जावै,
जुगल की जयति जयति जय गावै, रहस यह भादव की अति
भावैं, विलोकत 'मोद' न कोउ अघावै ॥ पितामह करें प्रसून
पवार ॥

पद १७

खेलत नाव नवारी श्याम सङ्ग सिया सुख धाम ।
मधुर मोर पंखी ता ऊपर, निरखत होत अराम ॥
चारों ओर खड़ी सब सखियाँ, लीन्हें सौज ललाम ।
सरयूजी अति मुदित भई हैं, लखि सियवर सुखधाम ।
'मनभावन' से यही विनय है, हृदय करहु विश्राम ॥

पद १८

लखु सखि करत युगल जल लीला ।
रसिक 'रमण' श्रीदशरथनन्दन, जनकनन्दिनी सरल सुशीला ।
भाद्र शुक्ल शुचि सुदिन एकादशि, सोहति सुन्दरि प्रकृति सजीला ।
सरयू सलिल तरंग तुंग बिच, विहरत नाव जडित मणि नीला ॥

कोउ सखि खेवत कोउ सखि निर्तत, कोउ सखि गावत राग सुरीला ।
वारिद वर्षत छवि नव दर्शत, तरसत रति पति अति शर्मीला ॥

पद १९

जलमें बिहार करत पिय प्यारी ।
भादों मास सुहावन सजनी, सरयू जल बढ़ि आई ।
पिय हिय अति उत्कंठा भारी, खेलत नाव नवारी ॥
चन्द्रकला सखि आज्ञा दीन्हों, सब सखियन सजि आई ।
रंग रंग को नाव सजायो, हीरा मणिन की किनारी ॥
कोई सखि नाचे कोई सखि गावै, अद्भुत खेल बनाई ।
घुम घुम घननन नाव घुमावे, बरसत फूल अपारी ॥

पद २०

सरयू में करते बिहार, बिहार मेरी सजनी ॥
भादो मास भरी जल सरयू, मणिन की नैया तैयार ।
गलबांहीं दिये सिया रघुनन्दन, बैठे हैं करके शृङ्गार ॥
नाव चलत घुम घननन घननन, सरयू की देखो बहार ।
सखियन नाचे फूल बरसावे, 'प्रेम' अनुराग की धार ॥

पद २१

अरे रमा भादों के महिनमां सियाजू खेलै झिझरी ॥
वनी चन्दन की नैया हीरा मणि पट री ।
ऊपर तनेउ चंदोवा चहुँदिशि झलरी ॥
तापै रतन सिंहासन छवि छाई उजरी ।
राजे अवध ललन मिथिलेश दुलरी ॥

पिया के श्यामल अंगनमां जामा धोती पियरी ।
 गोरी स्वामिनी सिया के सोहे लाली चुनरी ॥
 सियाजू के शीश पर चन्द्रिका बंदी मणिन जरी ।
 प्यारे राघव सजनमां सिर सोहे पगरी ॥
 दोऊ बैठे है परस्पर भुज अंसन धरी ।
 पिया उर मणि माला सिया उर तिलरी ॥
 सर तिरछी तकनियां हिया नोकनि गरी ।
 मंद मंद मुसुकनमां गरवा डारे फँसरी ॥
 बाजा बाजत मृदंग बीणा झांझ खंजरी ।
 रस रंगनि भरी हैं सखी गावें कजरी ॥
 छवि युगल के निहार भूली तन खवरी ।
 खेवनवाली मतवाली केवटा के छोकरी ॥
 बहे अति पुरवैया उठे सरयू में लहरी ।
 करे डगमग नैया डरे आली सगरी ॥
 लखि सखिन की ओर प्यारी सैन करी ।
 उठि के प्यारे रघुनन्दन पतवार पकड़ी ॥
 देखि सखियाँ निहाल जय जयकार उचरी ।
 अलि 'नेहशिला' सुमन अकाश से झरी ॥



विजय दशहरा

पद १

कनक पीठ राजत पिय प्यारी ।

आश्विन सित त्योहार विजय तिथि, दशमी शुभ सुखकारी ॥

चँवर छत्र सौजे विज्जन बहु, आस पास अलि धारी ।

राम रवानि अगनित तहँ आवति, देति सुभेंट जुहारी ॥

आई कोटिन शारद शचि रति, रमा उमादिक सारी ।

लोकपाल विवुधन बनिता बहु, चन्द्र दिवाकर नारी ॥

विविध भाँति उपायन अगनित, लेकर आई झारी ।

धरि धरि भेंट जुहारत सन्निधि, दम्पति छबि दृग चारी ॥

रूप निहारत प्रेम शिथिल तन, हिय चख मनसि विकारी ।

अति सुखसिन्धु मगन सबके चित, 'रसिक' रूप रस वारी ॥

ध्रुपद २

आज तौ विजय तिथि दशमी आश्विन मास,

शुक्लपक्ष पावन नव संवत की भाई है ।

विजयी रघुलाल विजय भामिनी सियाजू संग,

कनक सिंहासन राजै शोभा अधिकाई है ॥

चहुँओर चांपदारी ठाढ़ी कनकदण्ड धारी,

करत जुहार ताहि देत विदिताई है ।

'रसिकअली' देवकन्या नागकन्या नरकन्या,

सियाजू को भेंट दै दै वंदति सुख छाई है ॥

पद ३

अवधपुर सरस दशहरा माई ।

बैठे मनिमय दिव्य सिंहासन, सीय सहित रघुराई ॥

मागध सूत बन्दि विरुदावलि, वदहिं विचित्र बनाई ।
 विप्र वृन्द मुद दैन यवांकुर, शीश धरहिं हरषाई ॥
 गज रथ तुरग विपुल वाहन, वाहनी सु साज सजाई ।
 श्रीमहराजकुमार सामुहे, खड़े सु रंग रंगाई ॥
 ह्वै रह्यौ गान तान दशहूँ दिशि, दान मान सरसाई ।
 निरखैं नीलकण्ठ सिय रघुवर, तातन सह सुख पाई ॥
 महा उछाह नगर महलन मधि, अति आचरज दिखाई ।
 'युगलानन्यशरण' अनुदिन बहु, होय उमङ्ग बडाई ॥

पद ४

युगल छवि आजु न कछु कहि जाई ।
 सुभग दशहरा चौक विराजत, सीय सहित रघुराई ॥
 नवल शृङ्गार किये नख सिख लौं, बहु रतिपति छवि छाई ।
 छत्र चँवर व्यजनादिक सेवा, लोन्हे सखि समुदाई ॥
 बहु सखि मङ्गल भेंट लै आई, अर्पति शीश नवाई ।
 नीलकण्ठ बहु सखि दरसावति, जब अंकुर बहु ल्याई ॥
 बहु सखि गावति साज बजावति, नृत्यति भाव दिखाई ।
 'प्रेमलता' अनुपम छवि निरखति, अलिगन विजय मनाई ॥

पद ५

विजय हित दश हथियार सु साज ।
 भौंह धनुष दृग तीर संवारहु, सजनी करु जनि नाज ॥
 कोर कटार सांग चितवन सजु, सैन छुरी सम भ्राज ।
 हँसन असी मुख म्यान काढ़ि अब, बाढ़ धरहु तजि लाज ॥

शूली नथ की नोंक झोंक झुकि, केश सु फाँसी काज ।
दशन वज्र भुज पाश मनोहर, 'मोहनि' पिय संग गाज ॥

पद ६

सखि विजय दशहरा आजु री ॥
सिय रघुवर को सुयश छयो जग, देव दुन्दुभी बाजु री ।
घर-घर यह उत्साह अवधपुर, नर-नारी सुख साजु री ॥
भूषन वसन साजि नव दम्पति, राज सिंहासन राजु री ।
मंगल द्रव्य लिए चहुँदिशि ते, भेंटत पूरन काजु री ॥
गावत गन्धर्व अप्सरा नाचत, लावत कौतुक नाजु री ।
'प्रेमलता' यह अनुपम शोभा, निरखत सखिन समाजु री ॥

पद ७

सुभग दशहरा चौक विराजे रघुवर जनकदुलारी ।
छत्र चँवर व्यजनादिक सेवा, सौज लिये आलीन अपारी ॥
मंगल चौक वितान कलश ध्वज, झालरि वन्दनवारी ।
दधि दूर्वा फल फूल जवाँकुर, सजे धरे मणि थारी ॥
नीलकण्ठ बहु उड़त सु बोलत, निरखि हँसत पिय प्यारी ।
वाजन साज गान करि नाचत, 'प्रेममोद' बहु नारी ॥

पद ८

सुभग दशहरा चौक नवल दोउ राजत राज शृंगार किये ।
मनहुँ अलौकिक रति मनमथ छवि, संग अमित रितुराज लिये ॥
मंगल भेंट होत सब दिशि ते, गौर श्याम छवि नयन पिये ।
नृत्य गान बहु तान साज धुनि, सुख सम्पति वरदान दिये ।
यह 'रसमोद' केलि सुनि जीवन, पाय रसिक जग सुखसे जिये ॥

पद ९

लगत विजय शुभ साज सजाई ।

रंग महल अरु कुञ्ज-कुञ्ज प्रति, झरत चौघड़े अलिन बजाई ॥
छाई रही महलन के ऊपर, ध्वज पताक सब जगह सजाई ।
द्वार-द्वार प्रति कुञ्ज-कुञ्ज मधि, युगल कलश युग चँवर रंगाई ॥
तने वितान बादले मखमल, हाट वाट सोइ बसन डसाई ।
धनद निरखि सोइ बसन पाँवड़े, निज धन मद सहजहि बिसराई ॥
अलिन हृदय उत्साह सरस अति, रंग महल सब जुरि जुरि आई ।
महल बजार नगर की शोभा, शेष शारदा कहि न सिराई ॥
रसिक कृपा बिनु युगल रहस वर, आन भाँति नहि उर दरसाई ।
'मोदलता' रस सरस माधुरी, युगल ललन की निशि दिन गाई ॥

विसर्जन आरती पद-१०

ललन दोउ मोद विनोद भरे ॥

विजय उछाह मनाय छाय छवि, सखियन मन पिय हरे ।
चहुँ विधि साज बजाय गाय सखि, नटनि कला उधरे ॥
चहत पधारन शयन महल अब, दोउ गर बांह धरे ।
धूप दीप नैवेद्य अरपि सखि, इतर तमोल सरे ॥
आरति करि सखि लेहि बलैया, अञ्जलि सुमन झरे ।
'कांतिलता' बारति तन मन धन, युगल जयति उचरे ॥

सांझी-उत्सव

पद १

निरखत सांझी प्रीतम प्यारी ।
 चन्द्रमणी वेदी के ऊपर, रचना विरचित अति सुखकारी ॥
 कहूँ सुरसरो सरोवर कानन, मध्य सुचित्रकूट गिरि चारी ।
 बहु मुनि आश्रम युत सरिता बहु, विविधि रंग की बहु फुलवारी ॥
 कहूँ सुर सभा सुरेन्द्र स्वर्ग सम सुर सुन्दरी सम्हारी ।
 चैल विचित्र वितान धाम बसु, अति आश्चर्य तैयारी ॥
 धनुष स्वयम्बर श्रीमिथिलापुर, सहित समाज सुधारी ।
 सखि करजोरि बताय सराहति, 'दम्पतिअलि' बलिहारी ॥

पद २

सरस सांझी सुभग सखिन सरसावहीं ।
 महल मोहन मधुर चित्र श्री बाग वन,
 सरयु तर तीर शुचि घाट दरसावहीं ॥
 कबहुँ गिरिराज कल कूट मन्दिर विपुल,
 आवरन रंग रस रूप छवि छावहीं ॥
 भाव चित चाव अनुभाव मण्डित विविध,
 वरन हिय हरन सियलाल मन भावहीं ॥
 सुभग सांझी सुधा सरिस उत्सव सगुन,
 गाय 'अलियुग्म' पट प्रेम परसावहीं ॥

पद ३

देखो सखि शरद रैन सुन्दर छवि छाई ॥

निर्मल दश दिशा व्योम छिटक निकर अंशु सोम,
 तारागण जोति तोम विथुरित छवि पाई ॥
 कुसुमित नव वन विशाल चम्प बकुल तरु तमाल,
 आल बाल कलित माल वलित रत्न भाई ॥
 बोलत खग विपुल वैन पुञ्ज पुञ्ज मधुप गुञ्ज,
 बहत सुखद त्रिविध बात आनन्द उमगाई ॥
 सखिन सहित सीयराम बैठे ऋतु शरद धाम,
 लज्जित रति कोटि काम सुषमा सरसाई ॥
 लीन्हे सखि चमर छत्र व्यजन विविध सौज हस्त,
 सांझी रचि खेलैं तहँ जानकी रघुराई ॥
 सियजू की चित्र चारु प्रीतम सुठि लिखि सँवारि,
 पिय की लिखि सिय सुधारि रङ्ग विविध लाई ॥
 ललित रास रङ्ग केलि ताण्डव सङ्गीत भेद,
 विविध भाव गतिन रेल अङ्गहार लाई ॥
 लिखत चित्र विविध भाँति लखत मगन अतिअनन्द,
 निरखि निरखि युगल केलि 'रसिका' बलि जाई ॥

पद ४

विविध सुमनमय सांझी बनावत ।

रघुनन्दन अरु जनकनन्दिनी, अरस परस दोउ मुद उपजावत ॥
 पिय के चित्र सिया रचि सियके, रचि प्रीतम विपिनादि सुहावत ।
 महल विचित्र सिंहासन ऊपर, भोग समाज सकल दिशि पावत ॥
 मणिमय दीप प्रकाश विराजत, गान तान प्रमोद बढ़ावत ।
 'रसिक' चित्र दोउ लखत परस्पर, आनन्द प्रेम उमगि उर छावत ॥

पद ५

रघुनन्दन अरु जनक कुमारी ।
 शरद भवन बैठे सुख आसन, सखियन को सुखकारी ॥
 मणिमय साँझी रचत नवल दोउ, बहु प्रकार मुदकारी ।
 राज सुसाज समाज अनी बहु, गज हय चित्र अँटारी ॥
 सिय के चित्र चारु प्रीतम रचि, प्रीतम के रचि प्यारी ।
 अद्भुत अनुपम निरखि अलिन उर, नेह सरस रसकारी ॥
 सिय के चित्र देखन रघुवर गये, पिय के जनकदुलारी ।
 'रसिक' मिले भरि अंक उमगि उर, प्रेम दृगन चल वारी ॥

पद ६

चलु सखी साँझी निर्मल माई ।
 रचना विपिन प्रमोद आदि तव, देखत अति सुखदाई ॥
 युगलघाट अभिराम मनोहर, ललित लता सुन्दर छवि छाई ।
 महि सोपान कुंज युत रचना, रत्न वेदिका विविध बनाई ॥
 नवसत सजि शृङ्गार सखी तन, गावत चली उमगि हरषाई ।
 'सीयरसिकअलि' हिलि मिलि देखन, नवल बधूटी सब जुरि आई ॥

पद ७

सियाजू साँझी साँझ बनाई ।
 अद्भुत रचना देखि प्रिया की, मन हरषे रघुराई ॥
 धनि कर कमल धन्य चतुराई, मधुर विचित्र सोहाई ।
 कहूँ प्रमोदवन कहूँ विचित्र वन, कहूँ सु भूमि हरिआई ॥
 सरजू तीर नीर भल सोहत, मोहत मन ललचाई ।
 मनिमय घाट सुवाट हाट लखि, 'जानकीश' मन भाई ॥

पद ८

साँझ समै सानन्द विलोकन साँझी सिय सियपिय आये ।
 सिय मोहनि निकुञ्ज की रचना, सकल अलौकिक पाये ॥
 मन मयूर नाचत पिय घन लखि, बुद्धि बाग वन लहराये ॥
 चित चातकी पीय स्वाती लहि, विविध सुभाँति मुक्ति जाये ॥
 अहंकार सम्बन्ध सनातन, प्रद मायिक गति बिसराये ।
 अवध शरीर प्रान श्रीसरयू, मीन लीन रस रुचि प्याये ॥
 श्याम तमाल प्रेमलतिका लसि, केलि सदन सुख रस छाये ।
 षष्ठ अष्ट द्वादश षोडस दल, कञ्ज मध्य पिय प्रिय भाये ॥
 साज समाज वाद्य अलि गावहि, राग रागिनी दरसाये ।
 'जुगलविहार' बहार प्यार लखि, प्रेम प्रभा हिय अपनाये ॥

पद ९

धन्य सिय मोहनि तेरे भाग ।

साँझ समै साँझी अवलोकन, हिय बिच भो अनुराग ॥
 चन्द्रकला कमला विमलादिक, फूलित फलित सु बाग ।
 फूल चुनन पँखुरी विखरी पग, कोमल कमल सु लाग ॥
 श्याम भँवर मिस रस रस रस रसि, सुफल सिंगार सुहाग ।
 निज सुजंघ रखि पकरि मंजु कर, किये तोहि बड़भाग ॥
 हेमलता श्रीप्रीतिलता प्रिय, प्रेमलता सुख पाग ।
 प्रेमप्रभा जिय 'युगलविहारिणि', परसित प्रेम तड़ाग ॥

पद १०

साँझी अद्भुत सियजू बनाई ।

जो श्रुति सुनी न दृग नहि देखी, सो रचि प्रगट देखाई ।
 श्रीमिथिला श्रीचित्रकूट, श्रीअवध सु अनुपम ताई ।
 कमला मन्दाकिनि सरजू मिलि, विलग विलग दरसाई ॥
 हाट बाट घर घाट ठाट सब, रचना विविध सोहाई ।
 कंचनवन वन राम काम प्रद, वन प्रमोद सुघराई ॥
 चौरासी 'लख' योनि छोनि, अनहोनि होनि प्रगटाई ।
 सब थल निज सिय पीय सहित सखि, केलि करत हरषाई ॥
 तब श्रीचन्द्रकला कुशला प्रिय, प्रीतम पास पठाई ।
 ह्वै वरखास सभा कुञ्जहिं से, लाल लली ढिग लाई ॥
 अचरजमय रचना लखि पूँछत, केहि कृत कहु समुझाई ।
 हम अस कतहुँ न लखे ब्रह्मगति, चतुरानन चतुराई ॥
 तब एक मुग्ध सखी लखि पिय तन, प्रिय दिशि नैन चलाई ।
 हँसि गहि अङ्क मयङ्क वदन निज, चख चकोर रस पाई ॥
 यह प्रज्ञा केहिके ढिग से लहि, बोली मृदु मुसुकाई ।
 'युगलविहारिणि' श्रीसतगुरु प्रद, यह सब है प्रभुताई ॥

पद ११

रसिक दोउ साँझी देखन लागे ।
 लखि अद्भुत रचना अति सकुचे, मदन मनोरथ जागे ।
 मन्द बिहँसि दृग सैन चलावत, अरस परस रस पागे ॥
 बुद्धि विलास सराहत दम्पति, अति आनन्द अनुरागे ।
 'प्रेमलता' सिय पिय रसकेली, अलि निरखत पल त्यागे ॥

पद १२

नवल साँझी सखि आजु बनाई ॥
 मणि चौकी पर कुञ्ज सुमन की, तापर सेज बिछाई ।
 तापर नील पीत रंग रचिकै, दम्पति छबि दरसाई ॥
 विविध रंग फूलन के सुन्दर, पट भूषण पहिराई ।
 रस पागे दोउ सुरत बिहारत, बहु रति काम लजाई ॥
 लागि झरोखनि अलिगन निरखति, बहु रंग रचित सुहाई ।
 'प्रेमलता' अद्भुत यह रचना, लै सिय पियहिं दिखाई ॥

पद १३

निज कर ते साँझी रचि प्यारी, चन्द्रकला पिय पास पठाई ।
 सुन्दर वन प्रमोद बिच रचना, रची अनूपम वरनि न जाई ॥
 प्रथम समागम फुलवारी लखि, मृदु हँसि ललकि प्रिया उर लाई ।
 सुरति तरंग बढी तेहि औसर, लम्पट अँखियाँ रही अरुझाई ॥
 परसत अंग उमंग मदन की, नव उत्साह सुरत चित आई ।
 नैननही में केलि पसारी, नव रस स्वाद नैननही पाई ॥
 यह सुख लखति सखी नैनन ते, नेह समुझि अँखियाँ सकुचाई ।
 इत 'मोहनि' उत मोहन नागर, ठगि गये लखि साँझी सुघराई ।

पद १४

निज कर प्यारी साँझी बनाई ।

उत मनिमय मनिपर्वत झलकत, इत सरयू लहराई ॥
 कहूँ कहूँ सघन द्रुमन की पतियाँ, कहूँ लतिका झुकि आई ।
 कहूँ इत उत सारस मृग डोलत, कहूँ मोरन छबि छाई ॥

निरखि अलौकिक रचना प्रीतम, हँसि तिय कण्ठ लगाई ।
उत साँझी इत पिय प्यारी मिलि, 'मोहनि' छवि दरसाई ॥

पद १५

मिलि साँझी निरखत पिय प्यारी ॥

दे गलवांह उमंग रंग सों, कोटि मदन रति छवि पर वारी ।
प्यारी की छवि निरखत प्रीतम, प्यारी सांवल रूप निहारी ॥
अलिगन चहुँदिशि भानु कमल इव, जोहति हैं तन दशा विसारी ।
'सियाअली' सखि आज रसिकवर, साँझी के मिस रस विस्तारी ॥

पद १६

सुन्दर साँझी लाल बनायो ॥

कहि न जात छवि यह रचना की, अनुपम गति दरसायो ।
अद्भुत रचे कुञ्ज द्रुम डारें, नवल लता लपटायो ॥
जो निज भृकुटि फेर माया सो, तिहूँ लोक रचवायो ।
ताके कर कमलन की रचना, को उपमा कहि पायो ॥
क्या छवि देत सुमन की डारें, सुन्दर भ्रमर लुभायो ।
'सियाअली' कछु कहत बनै नहि, देखत ही बनि आयो ॥

पद १७

नवल रसिया नव साँझी बनाई ॥

नवल वाग नव कुञ्ज मनोहर, सरजू कूल सोहाई ।
नवल प्रिया के रूप रचे तहूँ, अंग अंग छवि छाई ॥
तापै नवल सिंगार सुमन के, सो छवि कहि नहि जाई ।
नवल रूप अपनो रचि प्रीतम, नवल प्रेम दरसाई ॥

प्यारी भुज अपने गर डारयो, निजभुज प्रिये लपटाई ।
 'सियाअली' जनु द्वैत रूप बिच, एक हार पहिराई ॥

पद १८

सुन्दर साँझी लखो री वीर ॥
 निरखु आज रचना प्यारी की, परम सुभग तसबीर ।
 रचति वेलि वाटिका मनोहर, सुन्दर सरजू नीर ॥
 तहँ प्रीतम की चित्र उरेहित, विहरन सरजू तीर ।
 करि शृंगार सुमन की अद्भुत, सुन्दर श्याम शरीर ॥
 निरखत रूप अनूप माधुरी, प्यारी भई अधीर ।
 'सियाअली' पिय वेगि बुलाओ, हरन हृदय की पीर ॥

पद १९

साँझी झाँकी अलिन रचावति ।
 कनक भवन अरु महल बाग के, कुञ्ज रौस के चित्र दिखावति ।
 अष्टकुञ्ज सरयू सरिता के, घाट वाट चहुँदिशि दरशावति ।
 श्रीप्रमोदवन कुञ्ज निकुञ्जन, षट ऋतु की सेवा सरसावति ॥
 सेज रहस विपरीत चित्र लखि, प्यारी पिय निरखत सकुचावति ।
 कतहुँ विवाह साज मण्डप रचि, कतहुँ कोहवर नकल उतारति ॥
 रहस रास के मण्डल भाँवरि, नृत्यकला कोटिन सजि लावति ।
 बहुविधि सखि रचि वाँकी झाँकी, पियप्यारी को निरखि रिझावति ।
 साँझी रहसथली रसिकन बिनु, नहि उर आवति भावति छावति ।
 'मोदलता' अलि लाड़-प्यार करि,

युगल ललन की निशि दिन पावति ॥

पद २०

होड़ मची है पिय प्यारी में, चित्रकला में को अधिकायो ॥
 नागरि चित्र सँवारति पिय को, लाल सिया को चहत बनायो ।
 प्रथम सोमवट रच्यो नागरी, तेहि तर चत्वर रास रचायो ॥
 तेहि पर नटवर नागर विरचित, लै कर वीन प्रवीन बजायो ।
 मधुरी हँसनि रसीली चितवनि, पियजू की सिय सब दरसायो ॥
 भूषन वसन सहित अँग सुषमा, सिय की लाल सही रचि पायो ।
 नयन हँसौहैं बदन लजौहैं, रचन चह्यो पर एक न आयो ॥
 हँसति ठठाय अली ताली दै, हार समुझि पिय अधिक लजायो ।
 जनि सकुचहु रस अधिक लहहुगे, 'कांति' लाल को सकुच छुटायो ।

आरती पद २१

साँझी शरद विलास की सखि आरती करिये ।
 छवि दम्पति सुख रास की नख शिख उर धरिये ॥
 साँझी सुमन सुचित्र सजायो, दम्पति लखि लखि अति सुख पायो,
 नवल नेह दोउ उर उमगायो, हास विलास हुलास की ॥
 अरस परस गर भुज लपटावै, चितवनि मुसकनि रस बरसावै,
 आनन्द अधिक अधिक अधिकावै, बाढत प्रेम पियास की ॥
 छत्र फिरत विजनादि दुरतु हैं, झांझ घण्ट घड़ियाल बजतु हैं,
 जय जय धुनि पुनि पुनि उचरतु हैं, प्रेमानन्द निवास की ॥
 आरति करि जल पट परसत है, पुष्पाञ्जलि सखिगन बरसत है,
 'कांतिलता' पिय चित करषत है, बलि बलि दोउ रस रास की ॥

शरद-रास-विलासोत्सव

पद १

रघुकुल कमल विभाकर सुख सागर हे ।
 निज जन मानस वास जय जय दाशरथे ॥
 नील नलिन रुचि सुन्दर गुण मन्दिर हे ।
 पीत वसन मृदु हास जय जय दाशरथे ॥
 जनकसुता हित पूजन वर कूजन हे ।
 दशमुख बंश हुताश जय जय दाशरथे ॥
 वचसि हरे रस शालिनि बस पालिनि हे ।
 निर्धुत नत भव पाश जय जय दाशरथे ॥

पद २

नटति रघुनायको रास रस चत्वरै ॥
 विशद राकेश कर निकर निर्मल विपिन,
 कान्ति सन्तान रंजित कनक भास्वरे ।
 विकसदरविन्द मधुगन्ध मंजुल मलय,
 वात परिपात संशमित विरह ज्वरे ॥ १ ॥
 सुषिर ततघन मिलित वर मुरज रव मये,
 ललित मंजीर स्वर सिंजित मनोहरे ।
 तत्तथै तत्तथै निनद शोभित वदन,
 चन्द्र तरुणी निचय कर विधुति मोदरे ॥ २ ॥
 वाम दक्षिण वलित युवति युग परिकलित,
 बाहु रघुनाथ तनु वृन्द सुन्दर तरे ।

विमल कल गान हृत मान सुर नर्तकी,
 निवह वर्णित निगम गीत नर्तन भरे ॥ ३ ॥
 कुन्द मन्दार मकरन्द सौरभ चपल,
 भृंग निकुरम्ब झंकार जनित स्मरे ।
 'श्रीहरि' चकोरपति हृदय हर कौमुदी,
 सान्द्रतर जानकी राममुख विधु वरे ॥ ४ ॥

पद ३

जय जय श्री वनप्रमोद रसिकन सुखदाई ॥
 सरयूतीर दिव्यभूमि वेलि लता रही झूमि,
 फूलन प्रति भँवरा अति गुञ्जत मन भाई ॥
 कुञ्ज कुञ्ज प्रति अनूप विलसत तहँ युगल रूप,
 जनकलली रघुनन्दन मधुर मधुरताई ॥
 चन्द्रकला विमलादिक नागरी नवीनी अति,
 मधुर यन्त्र लीन्हे कोइ सप्त स्वर जमाई ॥
 गावहिं सब दिव्य तान सुनहिं लाल अति सजान,
 रास सरस भीजे मन्द मन्द मुसकुराई ॥
 'अग्रअली' विपिन राज यह सुख तहँ नित समाज,
 जानत कोइ रसिक भेद जिन यह रस पाई ॥

पद ४

सखिन बिच नृत्यत युगलकिशोर ॥
 विपिन प्रमोद सरोजा तट पर, दिव्य भूमि चमकति चहुँओर ।
 चक्राकार रास मण्डल रचि, राग रागिनी के कल शोर ॥

चन्द्रकला विमलादि रंगीली, वीणा मृदंग लिये कर घोर ।
 चारुशिला सुभगा हेमा लिये, मुरली मुचंग किन्नरी जोर ॥
 चन्द्रा चन्द्रवती मिलि गावति, क्षेमा स्वरहिं भरत रस बोर ।
 मदनकला करताल बजावत, सारंगी नन्दा टंकोर ॥
 पिय शिर सुभग सुक्रीट विराजै, चन्द्रिका सीता के शिर रोर ।
 चन्द्रहार प्यारी उर चमकत, पिय उर मोतिन माल उजोर ॥
 कोटि कोटि रति काम विमोहन, नटवर वेष श्याम अरु गोर ।
 रूप माधुरी कहि न परत है, अंग अंग छवि के उठत हिलोर ॥
 कर से कर दोऊ मिलि धारे, नयनन सैन चलत दुहुँ ओर ।
 कबहुँ अधर रस पियत परस्पर, रस मतवारे दोउ चितचोर ॥
 प्यारी हाव पिया चित करषत, पिय के भाव प्यारी निज ओर ।
 दोउ रस सिन्धु मगन रसलम्पट, 'अग्रअली' नहिं चाहत भोर ॥

पद ५

श्रीसरयूतट वन अशोक मधि रास रच्यो श्रीअवध विहारी ॥
 चहुँदिशि मणिमय कोट बिराजे, मध्य कुँज बहु न्यारी न्यारी ।
 ताके चहुँदिशि पादप राजै, त्रै सम्पति युत अति रुचिकारी ॥
 ता आगे बहु लता कुँज है, जाति जाति के न्यारी न्यारी ।
 ताके चहुँदिशि कृत्रम पादप, जाति जाति मणि के छवि भारी ॥
 ताके चहुँदिशि गमले सुन्दर, बहुत भाँति के धरचो सुधारी ।
 ताके चहुँदिशि मोतिन झालर, मध्य में रचना बहुत प्रकारी ॥
 मध्य भूमि बहुरंग मणिन के, बेली बूटा विविध प्रकारी ।
 तापर जाजिम स्वेत विछे हैं, चन्द्रकिरनि के अति छवि हारी ॥

तामधि सिंहासन अति सुन्दर, स्वेत मणिनमय अति सुठि कारी ।
 तापर बैठे युगलविहारी, श्रीनृपनन्दन जनकदुलारी ॥
 गौर श्याम छवि को कवि वरणै, कोटि काम रति दुति छवि हारी ।
 प्यारी के तन शुभ्र सुसारी, प्यारे अंग जामा झलकारी ॥
 प्यारे उर मोतिन के माला, चन्द्रहार सोहत उर प्यारी ।
 कण्ठ पोत प्यारी गले राजे, पिय गले गोप्य विचित्र सँवारी ॥
 बाँहुन में अंगद सुठि सोहे, कर में पहुँची अति दुतिकारी ।
 करणफूल प्यारी श्रुति सोभित, पिय श्रुति कुण्डल मकराकारी ॥
 प्यारी के शिर मणिन चन्द्रिका, पिय शिर क्रीट भानु मद हारी ।
 विमलादिक सखि चहुँदिशि सोहैं, मध्य नटन लागे पिय प्यारी ॥
 कोई सखि वीण मुर्चंग काहु लिये, जलज तमूरा कोइ कोइ धारी ।
 बहुत सखी लिये बहुत यन्त्र हैं, थेइ थेइ कर नाचति बहु नारी ॥
 छम छम नूपुर चरनन बाजै, मनु मोहनी मन्त्र ध्वनिकारी ।
 गावति सब रागन रागिन में, स्वर सुनि इन्द्र बधुन मन हारी ॥
 जब प्यारी प्रीतम मिली गावत, ताथेइ ताथेइ औरन प्यारी ।
 स्वर्ग सात पाताल व्यापि गयो, परमानन्द के बह्यो पनारी ॥
 महारास चहुँदिशि में छायो, आकरष्यो जहँ तहँ नर नारी ।
 सब सखियन मन पिय अंग धारी, करौं मनोरथ रुचि अनुसारी ॥
 सबके रुचि लखिके प्रिया प्रीतम, धारयो बहुत रूप मन हारी ।
 जस जस जाहि मनोरथ रहेऊ, तस तस करि सब कियो सुखारी ॥
 असथावर जंगम जो जहँ लों, आनन्द मुरछा में नर नारी ।
 अद्भुत रास रच्यो पिय प्यारी, संग सखिन लिये 'अग्र'दुलारी ॥

पद ६

प्यारी तेरे नयना मदन सर वारी ।

रतनारी कारी कजरारी, चन्द वदन पर अति छवि धारी ॥

चितवनि बाँकी तिरछी प्यारी, मम हिय के घायल करि डारी ।

मीन कमल खंजन दुतिहारी, सब विधि प्राण आधार हमारी ॥

हँसनि नटनि अरु अंग मरोरनि, देखि देखि मैं जाऊँ वलिहारी ।

रूप उजागरि 'अग्र' तियन में, हौ तुम श्रीमिथिलेशदुलारी ॥

पद ७

प्यारे मुखचन्द बिलोकहु सजनी ॥

क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल, नयन कमलदल अति छवि छवनी ।

नासामणि अधरन पर राजत, मनहुँ कमलदल सुक उदवनी ॥

कल कपोल पर अलकैं छूटे, चन्द ऊपर मनु बसि बहु अहिनी ।

कटि कछनी काछे बने आछे, पद में नूपुर अति मन हरनी ॥

मुरनि दुरनि अरु हँसनि नटनि में, कोटिन काम करौं निवछवनी ।

रूप उजागर 'अग्र' स्वामि मेरे, मम हिय के हैं प्राण सजिवनी ॥

पद ८

नवल रस रास में नवल शोभा धरैं ॥

नवल आनन्द भर नवल रस केलि कर,

नवल दोउ सुघर नव रंग बन बीचरै ॥

नवल कर गान नव तान नव रीत सों,

प्रीत नव उमग नव खण्ड मण्डल भरैं ॥

नवल पग अटनि नव रटनि अलि पटनि मुख,

मधुर सुर बैन ततथेइ तथेइ थेइ करैं ॥

नवल नूपुर ठनकि झनकि नव किंकिनी,
 नवल गति ताल नव बाल के मन हरैं ॥
 नवल धुनि मृदंग नव गति सुर सुधंग वर,
 नवल वर वीन सुरझीन सुर ऊघरैं ॥
 नवल हितु पुंज मनो कंज मंजुल खिलीं,
 नवल अलि विपुल मन मगनि मद छकि फिरैं ॥
 नवल पट फरकि नव तरकि गति हरषि सिय,
 नवल दृग चपल कल मीन मन झगरैं ॥
 नवल मुसुकानि रसखानि बसि प्रान पिय,
 नवल भुवि चलनि हँसि मिलनि मनमथ ढरैं ॥ ६
 नवल अलि 'निवास' नव उपास हित कृपा करि,
 परम अनुराग नव भाग सों अनुसरैं ॥

पद ९

आज सिय संग पिय रासमण्डल रमैं ॥
 मिथुन करजोरि रस वोरि चित तोरि जग,
 निगम मर्जाद रजु लसत रस रास मैं ॥
 विविध भावनि करैं रमकि झुमि झुमि फिरै,
 झुनकि झन झनकि धुनि सरस नूपुर जमैं ॥
 अमित आमोद रस बोध में निपुन दोउ,
 छिपनि पुनि लसनि बसि परम परमा समैं ॥
 लेत बलिहारि पिय बारहीं बार हँसि,
 विवस रस झीन हित सकल सहि साथ मैं ॥

परसपरमथन सुख अतन बहु जतन करि,

लहति बड़भाग कोई कृपा अलि संग मैं ॥

ताताथेइ थेइ करति पगन ठुम ठुम धरति,

परत रस फन्द अलिवृन्द तन रूप मैं ॥

जलज नव नील तन झलकि हाटक वरन,

कनक छवि झलक सिय श्याम शुभ अंग मैं ॥

वीन कर राग सुर झीन श्यामा भनै,

सुनै जोइ गान विसरान भूमान मैं ॥

उमग अंग अंग बढ़ी सुभग शोभा मढ़ी,

चढ़ी हितु सैन पर मैन गन गान मैं ॥ ७

कलित कल प्राननी वलित दुति जामनी,

शरद अति जौन्ह पर भौन वन बाग मैं ॥

रास यह वास झिलि विहरि सिय रमन मिलि,

मया अलि 'निवास' पर वसत मन मान मैं ॥

पद १०

करत दोउ अरस परस श्रृंगार,

गौर वरण तन राजकुमारी, साँवल राजकुमार ॥

धरत चन्द्रिका क्रीट शिरन पर, पहिरावत उर हार ।

अँखियन में अंजन आँजत जनु, सान धरत सर मार ॥

नकवेसर मोती जु सम्हारत, दर्पण वदन निहार ।

'रामसखे' या युगल रूप पर, बार बार बलिहार ॥

पद ११

नटत राम नागर नागरिया ।

चन्द्रकला कल वेणु बजावति, गावति चन्द्रवती सहचरिया ॥

रघुनन्दन तोरत मृदु तानन, सीता स्वरन भरति मनहरिया ।

सुनि सुनि थकित भये सरयू जल, मुनिजन सकल भये वावरिया ॥

प्यारी अंश पिया भुज धारे, पिया अंश प्यारी भुजधरिया ।

मनहुँ तमाल लता कुंजन की, साँवल गौर परस्पर अरिया ॥

सुधि आवत जब ब्याह समय की, रास समय दोउ लेत भँवरिया ।

या सुख सिन्धु रूप के ऊपर, रति पति कोटि वारने करिया ॥

वन प्रमोद विहरत नाना विधि, अवध ललन अरु जनकदुलरिया ।

‘रामसखे’ दम्पति लीला रस, लखि लखि दृगन प्रेम उर भरिया ॥८

पद १२

देखु सखी बन्यो राम विहारी ।

नृत्यत सोम श्रवण वट के तट, नटवर वेष किये सुखकारी ॥

क्रीट मुकुट शिर जटित पुरटमय, तापर मुक्त गुच्छ दुति धारी ।

कुण्डल मकर नकर अलकावृत, विहँसन वदन मदन मद गारी ॥

गावनि मधुर रसिकजन रंजति, राजत संग विदेह कुमारी ।

वैजन्तो वनमाल पदिक उर, मणि भूषण भूषित मन हारी ॥

मानहुँ घन उमड़न गण सुरपति, धनु सोहत भये संग छवि भारी ।

नासामुक्त शुक्र दुति निंदत, दमकत दसन तड़ित अनुहारी ॥

काछे कटि कछनी जरकस की, पीत वसन शोभा अधिकारी ।

कर कंकण किंकिणि नूपुर धुनि, सुनि-सुनि थकित होत बनचारी ॥

विपिन प्रमोद अरुण चरणन की, छुटकि रही नखचन्द्र उजारी ।
 'रामसखे' यह रास माधुरी, निरखत नैन नेकु नहिं टारी ॥

पद १३

बनि ठनि नाचत हैं रघुराई, लखि शरद रैनि सुखदाई ॥
 नृत्य नवीन करत नटनागर, सुखसागर आगर मन भाई ।
 नूपुर किंकिनि कंकन की धुनि, सुनि मुनि विकल भये समुदाई ॥
 नाना भेद लेत गति नाना, तान तरंग रंग भरि छाई ।
 इत उत हेरत फेरि कंज मुख, मंजु मधुर युवती कहराई ॥
 नख शिख करि सिंगार सखि सुंदरि, धरि कर कंज पिय नाच नचाई ।
 झलकत हार मंजु मुक्तन के, गले रुमाल बाल ललचाई ॥
 ललित नवीनी झीनी पट की, झटकि बाल कटि लचक सुहाई ।
 'प्रिय' प्यारी हँसि तर्क बढावत, गावत देत ताल सुखदाई ॥

पद १४

देखो सखि ! आवत रास बिहारी ।
 सरयू तीर शृंगार विपिन ते, अति अनूप छवि धारी ॥
 सीताराम मनोहर जोरी, चितवनि की वलिहारी ।
 कुण्डल अलक हलक बुलाक की, दलकत हृदय हमारी ॥
 संग सखी सोहैं अलवेली, बनी ठनी छवि न्यारी ।
 सुमन शृंगार किये नख शिख लौं, निज कर श्याम सँवारी ॥
 प्रभु आगे सखि खेलति आवैं, फूलन गेन्द उछारी ।
 झुकि झुकि लेति परस्पर मारति, लखि आनन्द पिय प्यारी ॥
 आये दम्पति 'रामचरण' सखि, सुमन शृंगार उतारी ।
 नख शिख मणि भूषण शृंगार करि, सिंहासन बैठारी ॥

पद १५

सिंहासन राजत सिय रघुवीर ।

कोटिन भानु प्रकाश सिंहासन, कोटिन शशि सम सीर ॥

कोटि काम रति छवि निन्दत दोउ, श्यामल गौर शरीर ।

मणि बहु भाँति विभूषण शोभित, नील पीत पट चीर ॥

बहु सखि धूप की युक्ति बनावहिं, बहु सखि दीप सजीर ।

बहु सखि रचि नैवेद्य लगावहिं, बहु सखि लीन्हें नीर ॥

बहु सखि मुख मज्जन पट लीन्हें, बहु सखि लीन्हें वीर ।

बहु सखि छत्र व्यजन चामर लिये, बहु सखि करत समीर ॥

बहु सखि बाजन विविध बजावहिं, ताल देत अति धीर ।

‘रामचरण’ सखि गौरी गावहिं, मधुरे स्वर गम्भीर ॥

श्रृंगार आरती-पद १६

सखि आरती करें रस प्रेम भरी । सिय रघुवर को श्रृंगार करी ॥

मनिमय थार सखिन कर राजत, बाती रवि शशि दुति निदरी ।

बाजहिं ढोल निशान दुन्दुभी, शंख झाँझ करताल घरी ॥

नाचहिं गान करहिं सखि थेइ थेइ, सुमन माल मणि होत झरी ।

‘रामचरण’ सियराम रूप लखि, सखि आनन्द रससिन्धु परी ॥

पद १७

शरद पून विमलचन्द विमल महि आनन्दकन्द,

रामचन्द रास रच्यो देखन सखि धाई ॥

सरयु पुलिन विमल कूल फूले बहु रंग फूल,

कमल चम्प केतकी कदम्ब सुरभि छाई ॥

बोलहिं सारो मयूर कोकिला मराल कीर,
 गुञ्जहि अलि सकल राग रागिनी बनाई ॥
 किन्नरी अप्सरा गान मूर्छन स्वर ताल तान,
 धरहिं भूमि तरुन्ह लतन्ह नीर गगन जाई ॥
 बाजहिं मृदंग जंग सारंगी तमूर चंग,
 वीणा वेणु आदिक स्वर ताल गति सुहाई ॥
 युग-युग सखि बिच-बिच एक मध्य राम निरतत,
 संगीत ताण्डवी सुधंग गति अनेक ल्याई ॥
 गावहिं षट राग राम रागिनी स्वर ताल ग्राम,
 सब धरि सखि रूप राम रास हेतु आई ॥
 जानकि रघुनन्दन मन भावित भै रैनि ब्रह्म,
 'रामचरण' सर्व जीव परमानन्द पाई ॥

पद १८

देखो सखि अति अनन्द रास रच्यो रामचन्द,
 रजनी छवि छिटकि रही शरद चंदनी ॥
 बहु सखि मण्डलाकार नृत्य गान स्वर सँभार,
 नृत्यत रघुनन्दन मिथिलेशनन्दिनी ॥
 कंचनमणि लसत भूमि नृत्यत पद चपल घूमि,
 नूपुर छननन छमक छमक छन्दनी ॥
 कमला विमलादि तान रागाऽनुरागादि गान,
 करहिं राग रागिनी कला कलन्दनी ॥
 चन्द्रकला वीणा मुचंग धुनि मृदंग मधुर,
 अपर सखि सितार तार तर तरंगनी ॥

ता धिग धिग ता धिगधिग ता धिन्ता ता धिन्ता,
 ध्रिकिट ध्रिकिट धिधिकट धिधिकट प्रबन्धनी ॥
 उघटत संगीत राग ताल मूर्च्छनादि ग्राम,
 हाव भाव पानि मुरनि नैन खंजनी ॥
 'रामचरण' जुत समाज मेरे हिय में विराज,
 यह विहार नित अखण्ड रसिक मण्डनी ॥

हरिगीत छन्द-पद १९

मनि भूमि पर लगे नचन गति जगमगित प्रति छांही बनी ।
 जनु छवि शृंगारमनोज रति लजि निचनि पगतर सजि अनी ॥
 मनि तरु लतन्ह जगमगिति जनु देखत चपल तिर्पित नहीं ।
 सखि नचहिं मुद्राकार प्रभु बिच बीच कर ते कर गही ॥
 बहु ताल बाजहिं चरण चंचल मुरत कर मुख चष छुए ।
 मुक्ता कलिय नूपुर खसे जनु अमिय सर बहु शशि उए ॥
 दुहुँ ओर बाजन सखि बजावहिं रमसिंहा धुधु धद्ध धू ।
 भम भेरि बज तड तड नफीर निशान धधकहि डंक धू ॥
 सहनाई पिय पिय गुमकि गुंम मृदंग झनझन झाँझहीं ।
 तम्बूर जंग मुचंग करतालादि अनगन बाजहीं ॥
 तरु सुमन वर्षहिं श्रम अकर्षहिं सकल हर्षहिं रस भरे ।
 सो लहहिं जिन शृंगार रस भरि अपर रस बाहिर धरे ॥

हरिप्रिया छन्द-पद २०

श्रमकन मुख सोहैं कमल कोश मोती जनु ।
 तेहि उपर अरुण रज परम अनूपम को भनु ॥

मेचक कच अलि जनु कमल वदन पर झुकि झिले ।
 शशि राहु मनहु दुइ कुटिल समर तजि नइ मिले ॥१॥
 रतनन भरि झारी जल सुगंध सखि लीन्हें जू ।
 निज प्रभु मुख धोइ सुख मूरति चित दीन्हें जू ॥
 कोउ भुज गहि ठाढ़ी कोइ सखि अंग अँगोछै जू ।
 कोइ व्यजन करै कोइ अंचल ते मुख पोंछै जू ॥२॥
 कोइ कुण्डल अलकैं उरझि गई निरुवारै जू ।
 कोइ मुकुट सुधारैं भूषण टूट सँवारै जू ॥
 कोइ कसहि पीताम्बर अंग सुगंध लगावै जू ।
 कोइ चँवर ढुरावै मधुर-मधुर कोइ गावै जू ॥३॥
 सखियन के भूषण निज कर लाल सुधारी जू ।
 फूलन रचि चौकी सखि प्रभु कहँ बैठारी जू ॥
 कोइ चरण प्रक्षालैं घूप दीप करैं प्यारी जू ।
 छप्पन विधि भोजन लाइ सखी न्यारी न्यारी जू ॥४॥
 फल फूल मूल दल अमि निन्दक बहु ल्यावैं जू ।
 प्रभु सखिन पवावहि सखिय देइ प्रभु पावैं जू ॥
 रस पाइ परस्पर लै आचमन सु पान जू ।
 करैं दिव्य आरती बाजन धुनि धुनि गान जू ॥५॥
 एक सुमन सेज रचि प्रीतम को पौढाई जू ।
 सखि पाय पलोटीहि कुच पद परसि लड़ाई जू ॥
 हँसि हँसि सब माँगहि रास दान पुनि दीजै जू ।
 प्रभु 'रामचरण' उठि जल विहार कछु कीजै जू ॥६॥

चंचरीक छन्द-पद २१

नाचत नट नागर सुख सागर उमग्यो री ॥
 लालन मुख विमल इन्दु मेचक उर चिबुक विन्दु,
 सखि मुख चष विमल कंज तज गति विगस्यो री ॥
 भृकुटि कुटिल चंचरीक थिरकत थिर रसिक लीक,
 गान बीच अलि अलीक तजि ढिग निकस्यो री ॥
 कर कर गहि ललिय लाल झूमत गज मत्त माल,
 लचकत कटि ग्रीव चरण हिरि फिरि चलत्यो री ॥
 अलकै ललकै कपोल कुण्डल हलकै कलोल,
 जनु शशि उर रचि हिंडोल राहु रवि झूल्यो री ॥
 यहि विधि गये सरयु तीर तीर पुंज वन गंभीर,
 पुंज सुमन पुंज भ्रमरि गुंजत जन ज्यों री ॥
 जुग तट मणिमय पवित्र चित्रित श्रेणी विचित्र,
 प्रभु मन भव जल सनेत्र करुण रस भरचो री ॥
 नील रतन मानिक जनु सेज शयन मामिक फनु,
 जनु वन भव प्रभु रवि अलि रसन रट रस्यो री ॥
 सुमति कहति सूरति बलि मूरति दिखराउ अचलि,
 'रामचरण' जग तजि लखु मौन भैसि क्यों री ॥

पद २२

अवध छयल छवि दृगन बसी री ।

रामचन्द्र मुखचन्द्र मनोहर, फीको लगी अलि शरद ससी री ॥

राजत रतन जड़ित सिंहासन, क्रीट मुकुट पर कलंगी डसी री ।

मुक्तामाल विराजत उर पर, पीताम्बर कटि फेंट कसी री ॥
 वायें अंग जनकजा राजत, सीस चन्द्रिका अधिक लसी री ।
 'रामचरण' वारत मणि भूषण, देखि छवी सखि मन्द हंसी री ॥

पद २३

परस्पर पिय प्यारी करत शृंगार ।
 चन्द्रकला अरु चन्द्रमुखी दोउ, देत सुधारि सुधार ॥
 क्रीट चन्द्रिका ललित मणिनमय, शिर धरि करनि सुधार ।
 जनु घन दामिनि ऊपर राजत, रवि शशि ज्योति अपार ॥
 कुण्डल कर्णफूल बुलाक नथ, और विविध मणि हार ।
 कटि किंकिणि केयूर जटित नग, नूपुर अति रव कार ॥
 पीत नील अति रुचिर वसन तन, पहिरै घूम घुमार ।
 नटनि वेष यह सिय रघुवर को, निरखि 'रसिक' वलिहार ॥

पद २४

मोहनी राम रसिक की वीन ।
 बाजी री सखि ! रास मण्डल में, सुनिके भई हौं अधीन ॥
 अब छिन पल कल परत न सजनी, होत विरह तन छीन ।
 'रसिकअली' तजि लाज मिलौं अब, नेह भयो उर पीन ॥

पद २५

धिधिकट धिधिकट बाजे मृदंग ।
 स्वरनि भरत उघटत थेइ ताताथेइ, लाग डाट सम तान तरंग ॥
 चारनि चरनि धरनि उर भावनि, दृग मोरनि तस चलनि सुअंग ।
 'रसिकअली' रघुवीर साँवरो, नटत अटत मुनि उरनि अनंग ॥

पद २६

नटत नवल दोउ रंग भरे ।

जनकलली रघुलाल सलोने, अरस परस भुज अंश धरे ॥
छम छम छम छम छन नन नन नन, उघटत गति संग स्वरन भरे ।
बाजत बीण मृदंग बाँसुरी, चन्द्रकला कल गान करे ॥
नवल तियन मण्डल बिच प्यारो, मृदु हँसि उरनि अनंग वरे ।
'रसिकअली' कटि मटकि पटकि पग, झटकि लेत मुनि मन सुथरे ।

पद २७

मेरी आली कित गयो श्याम सुजान ।

सघन प्रमोद विपिन मधि तजि हम, छिपि रहे गहे उर मान ॥
ढूँढोरी सखि कुंज कुंजन में, सबही के सुख दान ।
'रसिकअली' सुन्दर रघुवर विनु, विकल होत तन प्रान ॥

पद २८

शारद विधु चय विजित वरानन, विधुकर निकर सुहासम् ।
मदन चाप जित भृकुटि कुटिल तिल, सुमन मुक्त धृत नाशम् ॥
चारु चिबुक दर ग्रीव मनोहर, स्वधर बिम्ब प्रतिभासम् ।
मुकुर कपोल चिकुर चय चुम्बित, नयन सरोज विलासम् ॥
जनकसुता कर धृत परि नृत्यति, ललित कण्ठ कृत गानम् ।
पद नूपुर रव रंजित दशदिशि, उचरित ताल प्रमाणम् ॥
पश्यमुदा रघुनन्दनमतिशय, चित्त चमत्कृत वेषम् ।
जनकसुता रंजन रतिपति मद, गंजनमङ्गमशेषम् ॥
'रसिक' भणित सीतापति गीतं, ललित पदावलि नीतम् ।
सज्जन श्रुति सुख प्रदमिदमद्भुतमञ्चित ताल विनीतम् ॥

पद २९

नई नई बधूटी आनि जुरी, धरि लई लालजू की आगुरियाँ ॥
 एक ओर अली मिथिलेश लली, सब गुन की आगरि नागरियाँ ।
 सिय भाल चन्द्रिका चमकि रही, प्यारे रामलला शिर पागरियाँ ॥
 मुखचन्द सों चन्द मिलाय रही, गुण गावें पिया की माधुरियाँ ।
 सुख सागर नागर नटत दोऊ, लखि 'युगलप्रिया' बड़भागरियाँ ॥

पद ३०

लखु भामिनि भली यामिनि शरद की ।
 श्रीसरयूतट रास कुञ्ज मणि, मण्डल कञ्चन भूमि जरद की ॥
 तन्यौ वितान स्वेत जरकस की, फरस बिछे बहु वसन फरद की ।
 रास रच्यो प्रीतम रघुनन्दन, सिय प्यारी सुख विमल हरद की ॥
 अलिगन विपुल विचित्र मण्डली, साज काम रति मान मरद की ।
 'युगलप्रिया' छवि लखत विरहिनी, लगन लग्यौ याते सौं नरद की ।

पद ३१

अलि छवि देखु शरद की यामिनि ।
 विमल अकाश चन्द्र परिपूरण, रासकुंज चलिये गजगामिनि ॥
 देखी जाय विपिन अद्भुत, मण्डल विभाग मणि भूमि सुनामिनि ।
 नटवर अद्भुत वेष रसिकमणि, अद्भुत चन्द्रकलादिक भामिनि ॥
 अद्भुत अवध रंगमणि महलैं, अद्भुत श्रीसरयू वर कामिनि ।
 नटति परस्पर बाहाँ जोरी, अद्भुत 'युगलप्रिया' की स्वामिनि ॥

पद ३२

मन मोहे राम प्यारे की रसीली अँखियाँ ।

सरयू तीर वन प्रमोद बिच, वृन्द वृन्द जुरि आईं सखियाँ ॥
गावति सिय पिय वीन बजावत, हँसि हँसि पूछत रसीली बतियाँ ।
चन्द्रकला अली यन्त्र स्वर उचरत, 'युगलप्रिया' हुलसत छतियाँ ॥

पद ३३

आजु सखी रासमण्डल रास रंग दरसै ।
निरखि-निरखि जुगल वदन तन मन सुख सरसै ॥
दरसै प्रिय कहनि करनि झकनि झुकनि झमकि चलनि,
भरनि स्वरन स रि ग म प ध नि ध प म ग रि सरसै ॥
सरसै नित सुरति कियनि मधुर अधर रस की पियनि,
चितवनि तकि बड्क पिय की पञ्च बान परसै ॥
परसै तन सुख की बढनि विधुर अतन सुतन करनि,
लेत तान तननननन मनहुँ मेघ बरसै ॥
बरसै रस नृप की रवनि गवनि विरह उर की समनि,
'रसमाला' दम्पति रति सम्पति नित सरसै ॥

पद ३४

देखौ सखि आजु रास मण्डल छवि प्यारी ।
छाई जहँ जुगल वदन चन्द्रिका उज्यारी ॥
उघटत संगीत गान ललन विहंसि देत पान ,
हटकि झटकि मटकि लटकि नितै वर नारी ॥
धुमनि नवनि सिकुरनि भजि चलनि मिलनि हँसनि रुसनि ,
डुरनि फुरनि घुरनि मुरनि लागति सुखकारी ॥
दलकनि हलकनि चितौनि जकनि झकनि छकनि थकनि ,

अकनि सकनि वकनि तकनि तरकनि दै तारी ॥
 बजत मृदंग गरजि गरजि लेत तान तरजि तरजि,
 जियरा लरजि लरजि सु 'रसमाला' वलिहारी ॥

राग मलार-पद ३५

रसिक दोउ निरत रंग भरे ।
 विपिन अशोक रासमण्डल रचि, जनकलली रघुलाल हरे ॥
 अमित रूप धरि करि कछु चेटक, जुग जुग तिय मधि श्याम अरे ।
 क्रीट मुकुट की लटक चन्द्रिका, झुकनि मदन मद दूरि करे ॥
 मोतिन हार जुगल उर राजत, कुन्द मालती माल गरे ।
 पग नूपुर मंजीर मधुर धुनि, कंकन किंकिनि मुखर तरे ॥
 मुरज मंजीर ढोल सारंगी, अरु मुरली की टेर करे ।
 विविध ताल संगीत अलापत, ततथेइ ततथेइ कहत खरे ॥
 कबहुँ मधुर मुसकाइ दम्पती, निरखत छवि भुज अंश धरे ।
 कबहुँ सुरति करि व्याह समय की, फिरत भाँवरी रसिक वरे ॥
 यह रस रास महा सुख सागर, द्वादश 'जोजन' लौं सबरे ।
 'रसमाला' भरि पूरि रह्यो बन, जग कोइ बुंद प्रकाश करे ॥

गौड़ मलार-पद ३६

आजु सखी लखु रास मण्डल दोउ, निरत हैं रसरंग भरे ।
 वन अशोक सम भूमि खचित मनि, रवि शशि अमित प्रकाश करे ॥
 श्रीरघुनन्दन जनकनन्दिनी, अमित मदन छवि अंग धरे ।
 क्रीट मुकुट चन्द्रिका मनोहर, भूषण अंग अंग नगन जरे ॥
 कुण्डल मकर हार मोतिन के, बैजन्ती वनमाल गरे ।

नासामनि झूलत अधरन पर, केसरि चन्दन खौरि करे ॥
 मोतिन मांग भरी वर वेनी' कुटिल अलक जनु भ्रमर खरे ।
 मणि कंकण पहुँची कर चूरी, बाजूबन्द जराउ जरे ॥
 नील पीत पट लसत दुहुँन तन, श्याम गौर मिलि लगत हरे ।
 किंकिनि मुखर अरुण कर पल्लव, पग नूपुर झनकार करे ॥
 थेइ थेइ करत भरत स्वर अलिगन, निरत पिय संग अनन्द भरे ।
 बजत मृदंग ढोल सारङ्गी, झांझ मजीरा वीन वरे ॥
 जुग जुग सखिन बीच रघुनन्दन, कर सों कर गहि लसत खरे ।
 करि मण्डल निरत सखियन संग, निरखि मदन बहु मूर्छि परे ॥
 पूरि रह्यो वन मण्डल सो रस, अचर सचर चर अचर करे ।
 सुर मुनि अगम सुगम रसिकन को, 'रसमाला' यह ध्यान धरे ॥

राग मलार-पद ३७

राजत रास मण्डल रघुलाल ।

श्याम गौर अभिराम राम सिय, निरत करत रास रस ख्याल ॥
 क्रीट मुकुट चन्द्रिका लटक दृग, मटक पटक पद की लखु बाल ।
 छिटकि रही तन ज्योति चहुँदिशि, अटक रहे दोउ छवि के जाल ॥
 श्याम शरीर पीत पट फहरनि, नटवर वेष मदन मद घाल ।
 ग्रीवा मुरनि भाव भरि चितवनि, निरखि थकित भइ सिय की बाल ॥
 कोइ सखि वीन मृदंग बजावति, झांझ मजीरा अरु करताल ।
 कोइ सखि विजन करति श्रमकनलखि, छिरकति विविध सुगंधरसाल ।
 कोइ सखि सुमन माल पहिरावति, भूषण सिथिल सँवारति हाल ।
 रचि वीरी दम्पतिहि खवावति, अवलोकति पिय नैन विसाल ॥

कोइ सखि युगल अंग अंग छवि लखि, रचि पहिरावति उर वनमाल ।
कोइ सखि मुदित सराहति पिय की, नटनि सिया की कोइ रसमाल ॥

सोरठ-दादरा-पद ३८

सखिन बिच निरत रामगोपाल ।
विपिन अशोक रासमण्डल बिच, करत अनेकन ख्याल ॥
पिय प्यारी दोउ नटत लटकि जब, चलत त्रिभंगी चाल ।
वलिहारी दम्पति की कहि कहि, चकित विलोकहि बाल ॥
बाजत बीन मृदंग मजीरा, सारंगी करताल ।
थेइ थेइ करहि भरहि स्वर अलिगन, वदन विलोकि रसाल ॥
सुनि चर अचर अचर चर भै सब, मृग विहंग तरु जाल ।
'रसमाला' रसिकन उर विहरत, जनकलली रघुलाल ॥

सोरठ-ख्याल-पद ३९

तेरी चितवनि मोही राजकुमार ।
अनियारे कजरारे नयनन, चलत समर सर मार ॥
खंजन मीन कमल मद मोचत, लोचन लोल निहार ।
जुवती गन तन लता विपिन बिच, खेलत रूप सिकार ॥
रसिक सिरोमनि राजकुंवर तुम, मन की जाननहार ।
'रसमाला' चितवनि उर साली, लीजौ वेगि उधार ॥

पद ४०

राघोजी थारे नैना जादू भरे ।
जिनके लगे भये बिन तन के, कसकत भूमि परे ॥
रूप भरे रूपाहि को धावत, ज्यों दुइ वीर जुरे ।

मीन जलज मृग लजित वापुरे, जल बन जाइ दुरे ॥
हमसे पथिक थके बहु मारे, घर बाहर सगरे ।
'रसमाला' वरजो नहि मानत, हियरे रहत अरे ॥

पद ४१

राघोजी थारे नैनन की न परतीति ।
कमलन कमलन फिरत भ्रमर जस, छाँड़ि प्रीति की रीति ॥
फूलन छाँड़ि कलिन पर धावत, गावत फिरत अनीति ।
मालती छाँड़ि केतकी गरके, हार भये करि प्रीति ॥
हारेहुँ पर हारि न मानत, चाहत अपनी जीति ।
'रसमाला' ए नैन तुम्हारे, करत फिरत नई रीति ॥

पद ४२

राघोजी थारे नैना जुलुम करै ।
चञ्चल मदन छके गरवीले, जहँ तहँ खेत लरै ॥
रूप सुधा पीवन के कारन, विधु सों विनय करै ।
इनसों मीन जलज खंजन लजि, जल बन वास करै ॥
इत उत चलत लरत फिरि सनमुख, हारेहुँ न हरै ।
'रसमाला' चितचोरि सबन के, काहू सों न डरै ॥

ठुमरी-पद ४३

राजकुंवर मन मोहि लियो, मैं परी रूप के ख्याल री ।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल, चितवनि करत विहाल री ॥
अलकावलि नागिनि सी दुहुँ दिशि, डस्यो चहत जनु हाल री ।
गोल कपोल तमोल भरे मुख, विहँसनि उर बिच साल री ॥

सुभग बुलाक पीक झुकि गेरनि, चितचोरनि सुनु बाल री ।
 'रसमाला' उरझी नहिं सुरझै, फँसी रूप के जाल री ॥

जङ्गला-पद ४४

देखु सखी अवधेश सुवन मुख शशि की ओर ।
 निरखत ही छबि वदन की भये नयन चकोर ॥
 श्याम तामरस अङ्ग लसत सोभा के ऐन ।
 चितवत ही चितचोरि लेत अनियारे नैन ॥
 श्रवन मकर कुण्डल दुति गण्डन पर रही छाये ।
 मनहुँ मदन के मकर अमृतसर जुगल अन्हाय ॥
 नासा मोती अधर पर झूलत मन ललचाय ।
 दसन दमक मन हरन हँसनि लखि मदन जगाय ॥
 बोलनि पिय की रस भरी बरसत जनु फूल ।
 लेत तान छिन छिन नई बनितन अनुकूल ॥
 कंबु कंठ उर में लसै मोतियन की माल ।
 पीत वसन कटि काछनि छाके रस ख्याल ॥
 अंश धरे भुज सीय के शशि वदन निहारि ।
 पान पवावत लाड़िलो निज सर्वसु वारि ॥
 यह छवि मेरे उर बसो निशि दिन रघुलाल ।
 अब न कबहुँ पिय बीसरौ लहि रस की माल ॥

पद ४५

आजु बनि ठनि आई जनकलली ।

कंचन वरन गोरी रास रस रंग बोरी, जनक किशोरी कर कमल

कली ॥ भृकुटी कमान बाँकी चितवनि बान जाकी, मारति
घायल भये हम से बली । बदन दिखाय हँसि नैनन नचाइ मन,
लेति हैं चुराइ संग तैसी हैं अली ॥ जोवन के मदमाती सदा
रसरंग राती, नृत्यति बताइ भाव रास की थली । पानहूँ चबाति
रूप भरी इतराति, 'रसमाला' अली साथ सिय लगति भली ॥

पद ४६

आजु बनि ठनि ठाढ़े राजकिशोर ।

श्यामल वरन तन सुरंग वसन मनि, मोतिन की दाम उर करति
उजोर ॥ सोहैं शिर क्रीट मनि कलँगी लसति बीच, कुण्डल
कपोल मन हरि लियो मोर । हलनि बुलाक की जु साली उर
आली लखु, जुलफैं अतर भीनी राखी है मरोर ॥ मृदु मुसकानि
हँसि हँसि बतरानि पी की, निरखि उठति हिय काम की हलोर ।
लेत मीठी तान कहि गान के विधान सब, गुन के निधान
'रसमाला' चितचोर ॥

पद ४७

आज जनकदुलारी रस रंगन भरी ।

चंपक वरनवारी वसन सुरंग वारी बदन मयङ्क वारी रूप अगरी ॥
अरुण अधर वारी बोलनि मधुर वारी तिरछी चितौनि सर
मारती खरी । वेसरि सुपास वारी भुजन मृनाल वारी उरज
उतंग वारी मदन जरी ॥ मोतिन के हार वारी मध्यभाग छीन
वारी जघन गम्भीर वारी भावन भरी । गमन मराल वारी नूपुर
झनकार वारी 'रसमाला' उर वारी मोह्यो मन री ॥

सौरठ-पद ४८

राजत पिय रस रंग भरे ।

विपिन अशोक रास मण्डल मधि, जनकलली गलबाँह धरे ॥

क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल, सुमन माल मनिमाल गरे ।

कटि काछनि कलित कल किंकिनि, पीतांबर मनि छोर जरे ॥

वदन विलोकि खवावत वीरी, मधुर चिबुक कर सों पकरे ।

तैसेहिं सीय पिया मुख छवि लखि, पान पवावति वदति हरे ॥

पिय की अलक सँवारति प्यारी, सीय वसन रघुलाल खरे ।

‘रसमाला’ उरझे नहिं सुरझै, नैना नैनन मांहि अरे ॥

पद ४९

राजति सिय रस रंग भरी ।

सखिन समेत रासमण्डल बिच, तिय नागरि गुन की अगरी ॥

कर सों कर गहि राज सुवन को, थेई थेई करति नचति सगरी ।

हँसि हँसि कै जोवन रंग राती, रूप सुधानिधि सों झगरी ॥

अंग अंग भूषन हैं निरदूषन, सारी नील जड़ाव जरी ।

कंचुकि कलित उरोजन झंपति, कमल नयन जब दृष्टि करी ॥

छम छम नूपुर पगन बजावति, लेति तान पिय संग खरी ।

‘रसमाला’ पिय तन मन वारत, निरखि वदन सुधिबुधि बिसरी ॥

पद ५०

सियवर छवि अवलोकु अली री ।

राजत मनिमय कनक सिंहासन, अमित मदन उपमा जु दली

री ॥ सुरपति मनि घन नील जलज वपु, निरखति छवि मम

मति न चली री । क्रीट मुकुट कुटिलालकवृत मुख, निरखत
रवि शशि दुतिहु मली री ॥ गोल कपोल श्रवण मणि कुण्डल,
नासामणि सुर सुमन कली री । बोलनि हँसनि पीक झुकि
गेरनि, हेरनि में हिय होत गली री ॥ विकट भृकुटि रद चिबुक
मनोहर, कंबु कण्ठ मणिमाल रली री । उर विसाल मोतिन की
माल बिच, सुमन माल छवि लगति भली री ॥ जङ्घा जानु
गुल्फ पद पङ्कज, निरखु सजन विश्राम थली री । धोती पीत
पुनीत कसनि कटि, किंकिनि दुति चहुँदिशि उजली री ॥ अरुण
कमल कर कमल फिरावत, गावत लखि सिय वदन छली री ।
सुनि पिय वचन रचन 'रसमाला', होति मुदित हँसि जनकलली री ॥

राग-विहाग-आरती पद ५१

लखु आरति युगल किशोर की ।

श्याम गौर अभिराम जुगल छवि, सकल अलिन चितचोर की ॥
रति रस सने नयन अलसौहें, चितवनि सुख रस बोर की ।
कल कपोल कुण्डल प्रतिबिम्बित, सिय विधु वदन चकोर की ॥
अंश धरे भुज लसत परस्पर, छूटी अलक मरोर की ।
'रसमाला' पिय छवि पर वारिय, उपमा मदन करोर की ॥

पद ५२

नृत्यत रास रसीली सजनी ।

वन प्रमोद की ललित लतन में, सुन्दर शरद सुहाई रजनी ॥
मुख मटकावत नैन नचावत, भृकुटि चलावत सुन्दरि मजनी ।
बैठनि उठनि सकोरनि पसरनि, कर लचिकावनि ललित लतजनी ॥

हँसिकै हेरनि कुटिल मरोरनि, पट फेरनि सबही कौ रजनी ।
 'प्रिय' प्यारी को अधिक रिझायो, गाइ बजाइ देखि दृग कँजनी ॥

पद ५३

हमारे माई जनकलली जू के राज ।
 जाके रस बस भये रघुनन्दन, रसिकन के सिरताज ॥
 पाटी पारत मांग सँवारत, अलक कपोलन माँज ।
 जीवन जरी भरी सब रस सों, करि हिय हार ललाजु ॥
 रचि रचि आभूषण पहिरावत, छाँड़ि दई कुल लाज ।
 सदा अधीन रहत हैं सिय के, गई सकुच सब भाज ॥
 सिय जानी रानी महारानी, निरखत करतल माल ।
 मुख मयङ्क निरखत हैं छिन छिन, भये चकोरके राज ॥
 रास समय नाचत प्रिया आगे, गावत बाजत साज ।
 'प्रियासखी' के सियस्वामिनि के, लाल करत सब काज ॥

पद ५४

शरद सोहनी रैन अली री ।
 उज्ज्वल अमल व्योम राजततर, उद्दीपन रसराज भली री ॥
 चन्द चाँदनी चमकति चहुँदिशि, फूली नवला कुसुम कली री ।
 जनु श्रीयुगल ललन मंगल हित, विहित हास रस रास थली री ॥
 फरस फनूस स्वच्छ मनिगन फवि, कवि उपमा हेरत न मिली री ।
 तदपि सकुच बस बरनि कहत कवि, मनु अद्भुत मनि भूमि फली री ॥
 बीना बेनु झीन सुर रागन, कंज करन मधि मोद मिली री ।

नटत नवल दम्पति सुख सम्पति, तेहि अनुरूप अनूप गली रो ॥
हेमलता प्रीतम तमाललसि , लपटि सु झूमति जनु अमली रो ।
नव नागरि नागर उछाह हिय, 'युगल अनन्यअली' अवली रो ॥

पद ५५

मीठी तान सुना दे सुघर बलमां ॥
अघर अरुण तल दसन पाँति वर, दामिनि मानो बसी थलमां ।
कहाँ छिपै छलिया छलके मद, पैयाँ परोँ लग जावो गलमां ॥
नहिँ बिसरे वह रूप साँवरो, कल्प समान बितै पलमां ।
'युग्मअली' दरसाय जावो प्रीतम, चौतनियाँ सबुजी सलमां ॥

पद ५६

नटत रसिक सिरताज रंगीलो ॥
आस पास सहचरिगन गावहिं, तान तरंग अनंग गसीलो ।
उमड़यो महा प्रमोद चहूँदिशि, रसिक प्रानवल्लभ सरसीलो ॥
इह रस सुधा स्वाद हित संतत, चाहत परम प्रीति सु छबीलो ।
'युगलअनन्यशरण' मतिगति रति, छन छन रास सदन अटकीलो ॥

पद ५७

रमत रास रस रहस रंगीलो ॥
गान तान रसखान प्रान प्रिय, छन-छन छकि-छकि सजत रसीलो ।
अलि गुन गन गुम्फित गावहिं कल, गीत रीत सु पुनीत छबीलो ॥
प्यारी प्रेम पयोधि मगन मन, अतन कला पूरन चटकीलो ।
'युगलअनन्यअली' अलवेली, छटा चारु चितवत उरझीलो ॥

पद ५८

रास रसिक निरतत रंग भीनो ॥

नख शिख नवल सजाय सरस शुचि भूषन वसन रसन रुचि कीनो ।
प्यारी संग रंग उज्ज्वल अनुराग बढ़ाय अंश भुज दीनो ॥
गति अति अलखित लेत ललकि लय, लागत पलक नहीं तन तीनो ।
'युगलअनन्यअली' रस बस पिय, सियजू के नित रहत अधीनो ॥

पद ५९

प्रियाजू के नैनन की वलिहारी ।

भाव भरे रस भरे मनोहर मुद प्रद अवधविहारी ॥
चितवनि चपलचतुरचित चोरनि मुरनि ढुरनि निज न्यारी ।
अंजन बिनहि सोहावन भावन बरसावन सुख वारी ॥
पगे प्रेम प्रीतम सुजान नित नवल रसिक हिय हारी ।
'हेमलता' उपमान वारि सब अनमिष रही निहारी ॥

पद ६०

छूम छननन पग नूपुर बाजै नटत छैल छबि अंग भरे ॥
बिच बिच श्यामा श्याम मनोहर, युगल युगल गलबाँह धरे ।
छोरनि गहन कहनि कछु हँसि हँसि, अरस परस छवि फन्द परे ॥
कंचनलता तमाल तरुण तरु, रस विहार जनु फूलि फरे ।
'ज्ञानाअलि' सुख स्वाद रसिकजन, पावैं ते कबहूँ न टरे ॥

पद ६१

छूम छननन छाया रही नटनि गति गान की ॥
महा रस रास यह परम मंगल महा, उघटि संगीत गति विविध

श्रीजानकी ॥ अमित नव नागरी मनहुँ तारावली, मध्य राकेश
पिय मधुर रस पान की । सुभग सिर चन्द्रिका क्रीट कुण्डल हलनि
श्रवन ताटंक करु कोटि शत भान की ॥ मधुर मृदु वीण ध्वनि
यन्त्र तन्त्रादि मिलि, मृदंग टंकोर चहुँओर स्वर तान की ।
'ज्ञानाअलि' लाड़िली लाल रस केलि सुख, कहत नहिं बनत यह
रहस सुनि कान की ॥

पद ६२

नटनि अवलोकि अवधेश नृप लाल की ।
चकित लखि ललकि सिय सखिन संग रहस छवि, गाय मृदु
तान दै सबहिं सुख जाल की ॥ सप्त स्वर ग्राम त्रय मूर्च्छना
मोरि मुख, मन्द मुसुकानि हिय उमंग उर माल की । डारि भुज
अंश पिय प्यारि दोउ परसपर, लटकि रहे श्रमित कहि सकत
नहिं हाल की ॥ छिटकि रही चाँदनी अमित चन्द्राननी, निरखि
छवि थकित रहि रसिक सिय बाल की । 'ज्ञानाअलि' सखिन
संग पियत रस माधुरी, तृप्त नहिं होत लखि नटनि सुनि
ताल की ॥

पद ६३

सीताराम रास करत सरयूतट माई ॥
गावत संगीत राग भाग बड़े सखियन के, पावत रिझवार प्यार
हार गल लगाई । नूपुर धुनि छम छमात परसत पग धम
धमात, गावत सुख शरद राग समय सुख सोहाई ॥ मुग्धा
सुख सिय निहारि पिय मुख बलिहारि लेत, देत ताल लय

निहारि जयति जय बड़ाई । 'जानकिवर' सुख सोहाग निरखत
अनुराग वाग, फूल त हिय जागि उठ्यो गुरूपद मन लाई ॥

पद ६४

नाचत रघुवर जनकलली री ।
रङ्ग भीनी बागा प्रीतम के, प्यारी केसरि रङ्ग रङ्गी री ॥
क्रीट चन्द्रिका जगमगात लखि, सब रसिकन के हृदय हली री ।
तताथेइ तताथेइ ताथेइ ताथेइ, उघटत छन्द प्रबन्ध भली री ॥
श्यामा कमला विमला नागरि, यंत्र बजावत मधुर कली री ।
चन्द्रकला चितवति चकोर सी, मधुरे गावति 'युगलअली' री ॥

पद ६५

रास मण्डप मध्य सोम श्रवन वट, नटत प्रिया प्रीतम आजु री ।
अलिगण जाल मकरसम चहुँदिशि, बीचहिं दंपति भ्राजु री ॥
विविध भाँति भूषण पट शोभे, शिरन चन्द्रिका ताजु री ।
कबहुँ प्यारी मुख चूमत प्यारे, अंशन भुज युत छाजु री ॥
राग अलापत नृत्यत थेइ-थेइ, नहिं कछु लावत लाजु री ।
मन्द मन्द मुसुकात परस्पर, माधुरी बीणा बाजु री ॥
पान खवावत गर लपटावत, नयन मयन सर साजु री ।
चन्द्रकला सखि चँवर दुरावति, 'जानकि' मने मन गाजु री ॥

पद ६६

सइयाँ मेरे चाल चलै लटपटिया ।
धीरे धीरे पग धरे मधुर नूपुर धुनि, सुनत मदन पीर चढे
चटपटिया ॥ अरुण जरकशी पाग सिर सोहैं, मन्द हँसनि लखि

होत छटपटिया । दै गलवाहीं पिया जनकलली के संग, फिरत
अशोकवन नई फुलबटिया ॥ अरुण गुलाबी रंग पहिरि घाघर
बागा, जड़कसी लति पति मोती अटपटिया ॥ 'नवलविहारी'
प्रिय तन मन वारत, रस भरो बीरी खिलावे झटपटिया ॥

पद ६७

मेरो एक आली दीजै साँचे नेह हिया के ॥
बड़े-बड़े नैना कजरारे सोहे लह लह, चितवत बस करे सांवल सु
पिया के । कंचन वरन गोरी मध्यामध्य रस बोरी, बसन भूषन
सुठि सब अंग तिया के ॥ नृत्य अरु वाद्य गान सब कला के
निधान, सब गुन गहे रसमाते बुधि धिया के । रास के विहारीजू से
नैना जोरे निस दिन, रास में न आलस करे 'नवल' सुजिया के ॥

पद ६८

नटत सियाजू पिया लेत बलिहरिया ॥
छम छम छमकत नूपुर बजावत, पिया मन मोहति कहति हरि
हरिया । पीत चम्पा फूल पर घन सोहत छवि, तापर नखत
दामिनी फूल झरिया ॥ लेत तान जब प्यारी नई-नई, वाह वाह
कहत पियाजू स्वर भरिया । 'नवलविहारी' प्रिया बिरिया
खिलावत, जय जय कहत सखिन मनहरिया ॥

पद ६९

नटत छवीले छैला सिया मन हरिया ।
जब पिया घूमत वागा फहरत, सिया मन कहरत मदन लहरिया ।
कंपत चलत पसेवनि अंसुवा, उमगत मनहुँ सावन की नहरिया ॥

गिरि गिरि लेत पिया तान अलापत, मुरछि परत सखि सिय
थरहरिया । 'नवलविहारी' प्रिय पिय रस लूटत, प्यारी पर छिर-
कत चन्दन फुहरिया ॥

पद ७०

झमकि झमकि लली लाल की नटनियाँ ।
निरखि निरखि अली हिय कसकनियाँ ॥
बाजत मृदंग वीन सारंगी तमूरा झीन, अलगोंजा बंशी बाजे बाजत
पैजनियाँ । मृगी नाचे चन्द पर शेष नाचे शंभू पर, कवि नाचे
बिम्ब पर मन के हरनियाँ ॥ कर सोहैं कर धरे थिरकि थिरकि
अली, तत्ताथेइ तत्ताथेइ ताथेइ कहनियाँ । 'नवलअली' के लली
बन्द के बंधनियाँ, रसिक शिरोमणि सों रस के पियनियाँ ॥

पद ७१

साँवरे सलोने जू झमकि झुकि आवे रे ।
शरद की रैन पिया अधिक सोहावे रे ॥
मन्द मुसुकाये प्यारीजू के गलबाँह दिये, ऊँचे स्वर तान ले मधुर
स्वर गावे रे । रास मण्डल अली संग लली कर धरि, छमछम
छननन नूपुर बजावे रे । कटि लचकनि ग्रीव मुरनि घुरनि नैन,
कुण्डल हलक मनि क्रीट झलकावे रे । 'नवल विहारी' प्रिया लली
संग रस वस, अली संग लता कुंज मन ललचावे रे ॥

पद ७२

आजु शरद रैन गोरी झमकत आवे रे ॥
गोरी चन्द गोरी लली चन्दन के विन्दा गोरी, गोरी मनि वसन

भूषन झमकावे रे । उरज उतंग गोरी मन्द मुसुकनि गोरी,
गोरी दृग कोरन सो मदन जगावे रे ॥ हिय बिच हार गोरी
कटि में किंकिनि गोरी, गोरी पग नूपुर छमकि छमकावे रे ।
'नवल विहारी' प्रिया लली लाल हिल मिलि, नटत उमंग राग
रागिनी जमावे रे ॥

पद ७३

पिया प्यारी नटनि में पायल बजायो री ॥

झननन झननन छननन छननन, किनिनिनि किनिनिनि किंकिनि
सोहायो री । कर धरि नटनि चक्रगति घूमनि, फहरनि वसन
सुगंध छहरायो री ॥ चहुँदिशि अलिगन कुहुकि कुहुकि
हिया, मदन उमड़ तन नूपुर बजायो री । 'नवलअली' के पिया
नायक सुभुज गहि, किंशुक प्रवेश करि बिब रस पायो री ॥

पद ७४

प्यारीजू के चन्द्रिका में चन्दहूँ लजायो रे ॥

नीलतम घन उड़गन चहुँदिशि सोहैं, जुग सुत नागिनी अमिय रस
पायो रे । भौंहन की टेढ़ी तिरछी नैनन की सान लखि, वेसरि
हलनहूँ में चित्तहूँ चोरायो रे ॥ उरज उतंगहूँ की कंचुकी की
चमकनि, हारहूँ हमेलन की हलनि रमायो रे । 'नवलविहारी' पिया
स्वामिनी की नीवी लखि, मदन के रस वस कसमस छायो रे ॥

पद ७५

शरद की रैन में नटत लली लाल आज ।

पवन चलत सननन सननननन, झननन नूपुर नदति बजे झाल
आज ॥ चन्द के किरन लली लालके किरनि मणि, भूषण
किरनि छवि उठे ज्योति जाल आज । ढोलक सारंगी अरु मृदंग
सुबाजत है, तननन बीन बंशी करत विहाल आज ॥ कर पर कर
धरि अलिगन चहुँदिशि, छम छम छमकत कहकत बाल आज ।
'नवलविहारी' प्रिय नटत नटत पिया, करज उरज गहि करत
निहाल आज ॥

पद ७६

कर धरि सिया नटे पिया मुख हेरि हेरि ॥
चहुँदिशि अलिगन छम छम छमकत, मन्द मुसुकनि में मदन रस
भरि भरि । फहरत वसन सुगंधन छहरत, मोतीमाल टूटत सखिन
के टेरि टेरि ॥ उरज गहत कर अधर चूमत जब, पूछत रसीली
बात अली मुख फेरि फेरि । 'नवलविहारी प्रिया' घूँघट मिस
निकसत, पिया रस लहत बाँधत बन्द बेरि बेरि ॥

पद ७७

आजु लली बनि आई मेरी भली जू भली ।
ओढे नील सारी कटि घाँघरो घुमारदारी, हाथन घुमावे नील
कमल कली । मन्द मुसुकाय दोउ नयनन नचाय प्यारी, भौंहन
मरोरि चलि रास की गली । करज सों मोरि मोरि भाव को
बतावै प्यारी, नूपुर झनक हिया दलक दली । 'नवलअली' की
लली कर सों कर गहि, पिया संग नटत सो रास की थली ॥

पद ७८

जुलुफ तेरी कारी मारि डारी मेरी जान ॥
 भूख को भुलानी अरुनारी भौंह कारी तेरी, दुहुँ दिशि जुलुफ
 गजब गभुआन । ऊँचे शिर क्रीट नोक झोंक को बखाने कौन,
 कलँगी हलनि हरि लाली लहरान ॥ साये नहि देत चैना पलक
 न लागे नैना, चितवत में जिया उठे कहरान । 'नवलअली'
 निरखत हिय करषत, पिया मुख चुम्बन के हिया ठहरान ॥

पद ७९

सँवलिया प्यारे काहे के बजावत बीन ॥
 सुनत श्रवन हिय दलकन लागे, अतन चढत तन पीन ।
 छम छम छमकत नूपुर बजावत, उरज के कसमस देत दुख दीन ॥
 कटि लचकावत कुण्डल झुलावत, नासामणि हलनि करत तन छीन ।
 'नवलविहारी प्रिया' स्वामिनि सिय पिय,
 कर धरि झमकत रस बस लीन ॥

पद ८०

प्यारी जू मुसुकनि में कछु कीन ॥
 छमछम छमकत नटत सखिन में, दृगन के कोर में हरत मन मीन ।
 उरज उत्तंग प्यारी चलत उत्तंग जब, मदन के जोर तें कँपत
 तन खीन ॥ कटि पर कर धरि मुख चमकावत, भौंह की
 मरोरनि में रस बस लीन । 'नवलविहारी प्रिया' मोहन मोहत,
 उरज गहत हिये हिय विच दीन ॥

पद ८१

दोउ नटै झमकि झमकाने ।

झननन झननन नूपुर बाजै, नील पीत फहराने ॥

उड़गन दामिनि संग बिराजे, मोतियन के लहराने ।

चहुँदिशि अलिगन चक्र घूमत जनु, मृगमद के छहराने ॥

चकई पर जब कमल बिराजे, लली लाल मुसुकाने ।

मंद मुसुकनि दृग कोर चलनि लखि, 'नवलअली' थहराने ॥

पद ८२

पिया के संग में सिया नटन लगी, नई नई लली संग नागरिया ।

सिया भाल चन्द्रिका चमकि रही, श्रीरामलाल शिर पागरिया ॥

चहुँदिशि अलिगन मण्डल बाँधे, कर सों कर धरि दै भाँवरिया ।

ता मधि लाल जनकलली दोऊ, चमकि छमकि दै चाकरिया ॥

झननन झननन नूपुर बाजे, किन किन बाजत किंकिनियां ।

तनन तनन अलि बीन बजावै, मनन मनन सर पांयरियां ॥

फर फर फहरत अंग वसन सबै, पिय तन बागा ललि घांघरिया ।

छर छर छहरत अंग सुगंधन, उड़ि आवत रस लागरिया ॥

घन के संग दामिनि दमकिरही, मनि चमकि रही अंग सागरिया ।

'नवलबिहारी' प्रिया सुधि न रही जब, कर धरि पिया चुम्बे अधरिया

पद ८३

अलिन मधि लली लाल नटन लगे ॥

झननन नूपुर बाजे किनिनिनि किंकिनि बाजै, तननन बीन सुनि

मदन जगे । मन्द मुसुकत जब छम छम छमकत, तान सुनत

मुनि ध्यान डगे ॥ उजत गहत कर अधर चुमत जब, बन्द टूटत
मन मैं ठगे । 'नवलबिहारी' प्रिया पिया रस बस सिया, लोक
वेद मरजाद खगे ॥

पद ८४

अलि मधि नटत झमकि पिया प्यारी देखो ॥
चक्र घूमत दोऊ फहरत बागा, घांघर घुमारदारी मनि की चमक
लेखो । कर सों कर धरि अलिगन चहुँदिशि, ताताथेइ ताताथेइ
कहत झमक पेखो ॥ झनन नूपुर बाजे साज सों अनूप साजे, बाजत
मृदंग धि धि कट-धिधिकट रेखो । 'नवलअली' के हिया कसमस
होत जिया, हहकत कहकत थहरत तन तेखो ॥

पद ८५

झमकि झमकि नटे लाल अरु ललिया ॥
चहुँदिशि अलिगन थिरकि थिरकि नटे, झननन बाजत नूपुर की
कलिया । बाजत मृदंग बीन झाल ओ सितार झोन, गावत
नवीन तान ललीजू की अलिया ॥ फहरत बागा घांघर सियाजू
की, चमकत मनिगन निरखत भलिया । 'नवलअली' निरखत
यह छवि को, छन भरि दृग नहिं मेरो कहूँ टलिया ॥

पद ८६

देखो सखि नटत झमकि दोउ चन्द ॥
चतुर सरोज रहत एक संगे, दून दस नखत प्रकासे सुखकन्द ।
पाँच फना के शेष युग चांपत, युग चकई हित लेत अनन्द ॥
निज सुखचाहत कसत फना जब, उड़गन खसत टूटत फूलबन्द ।

‘नवलबिहारी’ प्रिया चहुँदिशि अलिगन, चहुँकि अहुँकि केहुँकि
परी फन्द ॥

पद ८७

नटत दोउ लली लाल रस बस भारी ॥

कर सों कर धरि नयन सों नयना जोरि, बाजत नूपुर किंकिनि
सुखकारी । चहुँदिशि अलिगन छम छम छमकत, बाजत मृदंग
झाल ताल कठतारी ॥ चमकत मनिगन छहकत अलिगन, तननन
बाजत बीन सितारी । ‘नवलअली’ हिया कसक त सिसकत,
चहकत अहकत लेत बलिहारी ॥

पद ८८

साँवलिया तेरे जुलुफैं जुलुम करे ॥

निरखत मदन चढ़त नखशिख लौं, कहकत अहकत भूमि परे ।
उरज प्रबल मानत नहिं मिनती, कहर लहर तन भीर भरे ॥
कंपत अंग पसेवनि टपकत, लर खर कण्ठ नयना अँसुवाँ झरे ।
‘नवलबिहारी’ प्रिया स्वामिनि हिय बिच, नवल छयल छवि
रहत अरे ॥

पद ८९

प्यारीजू की तिरछी नैना हिया साँग लागी रे ॥

रतन जटित मनि कनक सिंहासन पै, बैठे नील साड़ी ओढ़े प्यारी
मद वारी रे । मन्द मुसुकत जब पीक उगरत झुकि, अलक
लटकनि डसे विष चढ़े भारी रे ॥ तन काँपे थर थर गिरि
गिरि शब्द होत, जिया को बचाओ प्यारी पैयां मैं तो परों रे ।

‘नवलबिहारी’ प्रिया स्वामिनी दयाल हिये, हँसि उठि पिया हिय
लाय दुख मेटो रे ॥

पद ९०

बेसरि हलनि पर मैं तो वारी प्रान ॥
बेनी लटकारी बेन्दी अति चमकारी प्यारी, बिन्दुल झलक देखि
हिया हहरान । भौंह की मरोर कारी अंजन सी फाँसी डारी,
दृग की चलनि लखि जिय थहरान ॥ सारी कारी जरकसी
सोहत किनारी दारी, चकित चित जोहत मोतिन लहरान ।
‘नवलअली’ के संग सोहत बनी के अंग, कर धरि नटन वसन
फहरान ॥

पद ९१

छैला की मधुर बानी जादू ऐसो लागी आली ॥
भावत न असन वसन न भूषन सैन, निशि दिन मदन उमंग
हिया जागी आली । अंग सब काँपन लागे अँसुवाँ टपकन लागे,
लर खर कंठ भये लाज सब भागी आली ॥ कमल फूलन लागे
किशुक चुवन लागे, अंग बन्द टूटन लागे रस बस पागी आली ।
‘नवलबिहारी’ प्रिया स्वामिनी के संगे संगे, छैला संग नटन
लागे तन मन तागी आली ॥

पद ९२

यह छोटे ऐसे छैला के कहर नयना ॥
छम छम छमकत चलत सखिन में, मन्द मुसुकान में जहर सैना ।
कटि लचकावे जब किंकिनी बजावे हो, नूपुर झनक में अजब चैना ॥

भाव को बतावे जब लेत मीठी तान हो, मदन लहर दे मधुर वैना ।
 'नवलविहारी प्रिया' पिया के मधुर छवि,
 सियाजू के हिया में करत ऐना ॥

पद ९३

प्यारी तेरे नयना में अजब टोना ॥
 अंजन न है प्यारी, फाँसी मेरे गरे डारी, दृगन के कोर में गजब
 होना । उठी तन पीर भारी, पीरी अंग-अंग छाये, मदन के
 लहर जुलुम ढोना ॥ अंग सब कँप गये, लर खर कण्ठ भये, प्राण
 के प्रयाण चहत होना । 'नवलविहारीप्रिया' पिया के चातुरि
 लखि, सिया हेरि आतुर नटत दोना ॥

पद ९४

साँवला नैन बान मारा कैसे के जियरा राखों रे ॥
 कमल नयन की तिरछी अँचकनि, लागिगै तन मन सुधि नहि
 पावे रे । थर-थर देह काँपे इन्द्रीपति हिये बिच, चलत पसेवा
 अँसुवा नयना झरि लावे रे ॥ है निरदर्ई रे दरद नहि हिया बिच,
 घायल करि छैला नियरे नहि आवे रे । 'नवलविहारीप्रिया'
 दशरथ सुत पिया, सियाजू के लाय मोको जिया के बचावो रे ॥

पद ९५

श्यामसुन्दर मनमोहन प्यारे, आइ गले मोरे लागू ना ॥
 कबकी बिछुड़ी प्यासी अँखियाँ, झाँकी अमृत प्याऊ ना ।
 जियरा तड़पे हियरा कड़के, अधर सुधा रस पागू ना ॥
 रस बस रसिये अंग सब गसिये, भुजबन्धन बिलमाऊ ना ।
 'नवलअली' विरहिन अति आतुर, त्यागो जनि रस पागू ना ॥

पद ९६

शरद रितु रतियाँ सुभग लागे री ।

सोम बट छहियाँ दिये गलबहियाँ, रास रस महियाँ प्रेम पागे री ॥ नटनि मुख मोरें सु दृग-दृग जोरें, सु छवि श्याम गोरें दोउ राग रागे री । 'जुगल' नव नेही रसिक प्रिय एही, हिये में निबसेही मेरे भाग जागे री ॥

पद ९७

शरद निसि उदय सु जुगल ससी ।

तारागन अलि अवलि भली विधि, कुमुद कली विकसी ॥

जगमगात अम्बर सम्बर दुति, ध्रुव विश्वास लसी ।

बरसत सुधा सु छवि चहुँदिशि फबि, रसिक सु रहस रसी ॥

नचत रचत गति विविध ताल लै, रतिपति मान नसी ।

दिव्य भव्य सिंहासन आसन, सिय पिय सुखद जसी ॥

मुरनि ठुरनि मुद सींव ग्रीव वर, रदन वदन विहँसी ।

प्रभा मोहिनी जगमग छाई, उपमा उप न धँसी ॥

श्रीगुरु प्रीतिलता सु फलित तरु, पिय सु तमाल फँसी ।

'जुगल बिहार' बहार स्वामि प्रद, मानस कुँज बसी ॥

पद ९८

देखो देखो री नटनि पिय प्यारी की आज ।

रस रास रच्यो सह सखि समाज ॥

मुखचन्द्र चन्द्रिका प्रभा फैलि, प्रफुलित सफलित हिय प्रेम बेलि,
कलकेलि करत भुजगर सुमेलि, ताताथेइ ताताथेइ करताल बाज ॥

उझकनि झुझकनि मुरकनि सुअंग, कटि लचनि सँचनि मुद वचन
व्यंग, उर भरि उमंग हर रति अनंग, श्रीचन्द्रकलादिक संग भ्राज ॥
यह युगलबिहार बहारदार, प्रिय 'युगलविहारिनि' हीय हार,
नित निगम सुनेति प्रकार प्यार, वरधन गुरु कृपया पूर्ण काज ॥

पद ९९

निरत करत नवल छैल नचत नृपति नन्दिनी ॥
अलिन पुंज चहुँ सुपास, मन्द मन्द करत हास,
होत विविध रहस रास, छिटकि शरद चन्दिनी ॥
मधुर मधुर बजत साज, छन छन छम छम अवाज,
करहिँ सकल छमकि नाज, मार मद निकन्दिनी ॥
धाव ताव अति सुहाव, हाव भाव अतिहिँ चाव,
नैन सैन करहिँ वैन, पीय हीय फन्दिनी ॥
प्रगटि ललन अमित अंग, बिच-बिच अलि आप संग,
गाय-गाय अति उमंग, हँसनि लसति मन्दिनी ॥
थिरकि थिरकि फिरकि फिरकि, फिरकी सी फिरति भूमि,
झूमि-झूमि चूमि-चूमि पद गयन्दिनी ॥
प्रभा प्रेमलता कुँज, कला केलि वेलि नेह,
जुगल सु विहार शिवाशिव सु वन्दिनी ॥
वन प्रमोद नित विनोद, निरखि बढ़त प्रेम पौद,
प्यारी पिय गोद पाय, गुरु पसन्दिनी ॥

पद १००

उमगि रस रास दोउ नृत्य करने लगे ॥

नैन सों नैन अरु बैन सों बैन मिलि,
 हीय सों हीय आनन्द भरने लगे ॥
 ताल पद चलनि कटि ग्रीव की हलनि नट,
 कोटिकनि कलनि दल वलनि हरने लगे ॥
 श्रमित कन वदन लखि अमित रति मदन लजि,
 व्योम ब्रह्मादिकन सुमन झरने लगे ॥
 'जुगल सुविहारिनी' प्रभा पर प्रेम लहि,
 स्वामि करुना लता प्रेम फरने लगे ॥

पद १०१

निरतत रसिक रसिकनि संग ।
 मुरि चलत झुकि झूमि अङ्कन, भरत सहित उमंग ॥
 अरुझि लट श्रम स्वेद टपकत, परत आँचर जाय ।
 मनहुँ फनि शिशु लरत बिधु ढिग, चुवत अमृत आय ॥
 चलत चपल कुरंग दृग मुरि, हलत कुण्डल लोल ।
 मनहुँ विधु मण्डल मकर जुग, झूमि करत कलोल ॥
 बजत किंकिनि पैजनी संग, खसत नवल निचोल ।
 गोल अमल कपोल पर, झुमका सु करत कलोल ॥
 स्वच्छ चाँदनी शरद की, छाई सु विपिन प्रमोद ।
 झलक जगमग निरखि दम्पति, होत चित अति मोद ॥
 श्याम जुग बिच गौर श्यामा, बीच प्यारी श्याम ।
 नचत लचत सु मचत झुकि झुकि, होत छवि अभिराम ॥
 अमल सरयू नीर झलमल, चन्द आभा पाय ।
 एक रस सुप्रकाश 'मोहिनी' रही चहुँदिशि छाय ॥

पद १०२

सखि जकि रही निरखत रास ।
 श्रमित प्यारी श्रम न मानति, नचति नवल हुलास ॥
 केश सुमन सुझरत छिन-छिन, झलक श्रमकन बूँद ।
 परसि प्रीतम अङ्ग रस बस, लेति अँखिया मूँद ॥
 कबहुँ गावति हँसि रिझावति, सैन ही ते बाल ।
 उछरि उर पर परत बिखरत, टूट मोती माल ॥
 खसत बसन सुझुकति जब मुरि, नवल दरसत अङ्ग ।
 विवस तन न सम्हार की सुधि, बढ़त अँखियन रंग ॥
 विखरि वार सुवदन छहरत, झूम झुमका लोल ।
 आय छिन-छिन उछरि-उछरि, सु परत विमल कपोल ॥
 वजत कटि किंकिनि सुकङ्कन, चरन नूपुर बाज ।
 मनहुँ मदन सु दुन्दुभी रव, सुनत पिय हिय गाज ॥
 जबहि आवत व्याह की सुधि, लेति भाँवरि झूमि ।
 कबहुँ पिय मुख इन्दु निरखति, हँसि अधर झुकि चूमि ॥
 सिथिल अङ्ग अनङ्ग झलकत, मुरि दिये गलबाँह ।
 नवल कर सु सम्हारि प्रीतम, खड़े 'मोहनि' चाह ॥

पद १०३

प्यारी नवल तन सुकुमार ।
 खड़ी प्रीतम कंध कर धरि, झुकी दै निज भार ॥
 चन्द्रवदन सुस्वेत झलकत, सखी विजन सुधार ।
 पवन मन्द सुगंध शीतल, बहत रसहि पसार ॥

लट लटकि डसि लेत प्रीतम, चढ़त विष को सार ।
 दृगन झूमन निरखि प्यारी, दै अधर मधु धार ॥
 मृदु हँसन सङ्ग सैन शोभा, कहत वार न पार ।
 निरखि भाग सराहि अखियाँ, 'मोहिनी' दिलदार ॥

पद १०४

प्यारी रही चन्दहि हेरि ।
 कछुक लट मुख पर विराजत, अहि रहे जनु घेरि ॥
 श्रम विवस श्रम स्वेद टपकत, परत उर पर जाय ।
 चन्द ते रस लेइ व्यालिनि, शिवहि पूजत आय ॥
 वदन की छवि का कहौं, अञ्जन लगे दोउ नैन ।
 मृदु हँसन अधरन झलक कछु, देत पिय हिय चैन ॥
 श्याम बिन्दु सु भौं जुगल बिच, 'मोहिनी' छवि छाये ।
 मनु गुलाब मिलिन्द छौना, रस चखत अरुझाय ॥

पद १०५

श्रम बस सिथिल झलकत अङ्ग ।
 लटकि लट श्रम स्वेद टपकत, घटत तउ न उमङ्ग ॥
 जंघ थहरत वसन फहरत, चढ़त मुख रस रङ्ग ।
 चपल चख थिर घूमि झूमत, बढ़त मदन तरङ्ग ॥
 परसपर उर हार अरुझी, कौन सुरञ्जन ढङ्ग ।
 नवल नागर 'मोहिनी' छवि निरखि छिन छिन दङ्ग ॥

पद १०६

रास महँ खेलत कन्दुक खेल ।

पिय प्यारी प्यारी प्रीतम दिसि, मारत हँसि रंग रेल ॥
 उर अंकुर नव लखि सखियन के, कहत चोरायो गेन्द ।
 सकुचत ही हिय हनत नैन सर, प्रगटत तन रस स्वेद ॥
 कबहूँ ताकि कपोलन मारत, तापर मारत सैन ।
 रिस बस तीखी नजर निहारति, रिझवत कहि मृदु बैन ॥
 जो सुख अगम सुगम सियपद रज, शरद चाँदनी रात ।
 निरखत श्याम भँवर रस लोभी, 'मोहिनी' अंग अलसात ॥

पद १०७

छूम छननन धुनि छाये रही, प्यारी हँसि पियहि लोभाय रही ।
 पिय मुख इन्दु चहूँदिशि सखियाँ, तारागन दरसाय रही ॥
 अलिन संग मिथिलेश लड़ैती, मिलि मधुरे सुर गाय रही ।
 सुन्दर वन प्रमोद सरजूतट, अजब छटा छहराय रही ।
 रहसि रास दम्पति विलोकि सुधि, 'मोहनिअलि' बिसराय रही ॥

पद १०८

छूम छननन धुनि छाये रही, प्यारी हँसि पियहि लोभाय रही ।
 गरबहियाँ दै रीझि छिनहि छिन, नैनन सैन चलाय रही ॥
 विहँसि कपोल परसि मुख चूमत, कारी लट लहराय रही ।
 मदन उमंग अंग श्रम झलकत, अँखियन रंग झलकाय रही ॥
 छवि दरसाय मोहनी बतियन, सुनि श्रवनन रस पाय रही ॥

पद १०९

मो मन मृग को फाँसि लियो है, हाय अलक के जालन सों री ।
 घायल कीन्हों अवध लाड़िलो, मारि नयन के भालन सों री ॥

लगी प्रीति छूटै नहि अब तो, कीन्हें ऐसी चालन सों री ।
‘मोहनिअली’ कहो जाके अलि, यह सन्देश मेरो लालन सों री ॥

पद ११०

हे नटत नट नागर नवेली संग री ।
अवध छैल मिथिला छवीली संग री ॥
सरस शरद् निशि नभ पूनम शशि, प्रमोदवन सुथल सकेली संग री ।
पुलकि परस्पर चहुँ रचि मण्डल, सखिन गरभुज अंश मेली संग री ॥
ताथेई ताथेई थिरकत गावत, लचकत लङ्क लचीली संग री ।
झनकत नूपुर कंकण किंकिणि, झलकत श्रम अलवेली संग री ॥
नैन सैन करि क्रीडत किलकत, रमकत रभसि रंगीली संग री ।
रास महा रसनिधि अवगाहत, मगन सिया ‘रमण’ सहेली संग री ॥

पद १११

सखिन संग विहरत नवल किशोर ॥
श्याम राम अभिराम नयन अति, सीता सरस सुभग अंग गोर ।
निर्मल निशा निशाकर निर्मल, निर्मल नखत उदित चहुँओर ॥
चहुँदिशि मिलि मण्डल रचि अलिगण, निरतत गावत प्रेमविभोर ।
ताथेई ताथेई उचरत प्रति मुख, कंकण किंकिणि नूपुर शोर ॥
झलकत श्रमकण विधु आनन पर, खसकत कटि कच ग्रन्थिन डोर ।
चन्द्रकलादि सखी सजि नख शिख, बजवत विविध यंत्र करि होर ॥
दै गलबांह कबहुँ मुख चूमत, चितवत चखनि चतुर चितचोर ।
एहि विधि ‘रमण’ करत दम्पति वर, रास रहस रस वश बड़ जोर ॥

पद ११२

रमत सिया दूलह रास नवीनो ॥
 शरद चाँदनी छिटकि रही री, तामधि दोउ रस भीनो ।
 नइ-नइ राग अलापत प्यारो, प्यारी गर भुज दीनो ॥
 निरखि निरखि मुखचन्द प्रिया को, पिय चकोर दृग कीनो ।
 'सियाअली' बलि जात रसिकवर, कोटि काम छवि छीनो ॥

पद ११३

प्यारी लागे छयल की छमकन ॥
 हलत बुलाक श्रवन बिच कुण्डल, तापै डोलै मुकुट की लटकन ।
 नचत रसिक रघुलाल सांवरो, नूपुर बाजै छमा छम छननन ॥
 नइ-नइ तान सुनावत रसिया, आली भावै कमर की लचकन ।
 'सियाअली' नृत्यत प्यारी संग, वारी जाऊँ भुजनि की अरुन्नन ॥

पद ११४

सखि आई रसीली शरद रतिया ।
 सरयू तीर चाँदनी छाई, शोभित कुंज हरित लतिया ॥
 रमत रास दोउ रास कुंजन बिच, थेइ थेइ करत अजब गतिया ॥
 यामें रास रमत प्यारी संग, आली री हुलसत छतिया ।
 'सियाअली' दोउ दे गलबाँही, हँसि हँसि करत रसीली बतिया ॥

पद ११५

सदा मंगल सदा मंगल सदा जोरी का मंगल हो ।
 हमारी सिय सोहागिन का सदा पिय संग मंगल हो ॥
 सदा मंगल जनकपुर का सिया पितु मातु का मंगल ।

सदा मंगल अवधपुर का पिया पितु मातु मंगल हो ॥
 सदा मंगल प्रमोद वन का हो मंगल रास मंडप का ।
 सिंहासन छत्र का मंगल चँवर दुहुँ ओर मंगल हो ॥
 सखा पिय दासों का मंगल सिया सखि दासि का मंगल ।
 अली श्रीचारुशीला की सदा मंगल सुमंगल हो ॥
 सदा बाजा बजे मंगल अली सब गावहीं मंगल ।
 जो नृत्यति हैं नवेली सब सदा संगीत मंगल हो ॥
 न हो कभी मान प्यारी को दुखावें दिल न प्रीतम का ।
 सदा अंग अंग से अरुझे निहारे 'नेह' मंगल हो ॥

आरती-पद ११६

सियावर सीता प्यारी की, आरती रास विहारी की ॥
 शरद ऋतु सुखद सुभास्विन मास, पूर्णिमा पूरण चन्द्र प्रकाश,
 नखतमणि निर्मल सुमन सुहास, नेत्रजा पुलिन प्रमोद विलास,
 मध्यनिशि भाग, सुहावन लाग, उमग अनुराग, रास रस पाग,
 नटनि दम्पति भुजधारी की ॥ आरती० ॥
 नवेली नख शिख सजि आई, संग बहु वाद्य यन्त्र लाई,
 मण्डलाकार घेरि आई, नाचि ताथेइ ताथेइ गाई,
 है सखिन समाज, रमत रघुराज, रसिक शिरताज, मदन रतिलाज,
 जानकी 'रमण' विहारी की ॥ आरती० ॥

दीपावली-उत्सव

पद १

सांझ समय रघुवोर पुरी की, शोभा आजु बनी ।
ललित दीपमालिका विलोकहिं, हित करि अवध धनी ॥
फटिक भीत सिखरन पर राजति, कञ्चन दीप अनी ।
जनु अहिनाथ मिलन आयो मनि, सोभित सहस फनी ॥
प्रति मन्दिर कलसनि पर भ्राजहिं, मनिगन दुति अपनी ।
मानहु प्रगटि विपुल लोहितपुर, पठइ दिये अवनी ॥
घर घर मंगलचार एक रस, हरषित रंक गनी ।
'तुलसिदास' कल कीरति गावहिं, जो कलिमल समनी ॥

पद २

आज महा छवि रंग भवन की ।

दीपमाल मणि मंडित मन्दिर, मनहुँ वसंत फूल सुख वन की ॥
सखिजन रव कल पिक मधुकर धुन,

चलन सुखद मद त्रिविध पवन की ।

पिय प्यारी मद मदन विलोलित, महल दुती दमकी सु गवन की ॥
दीपावलि मधि भुजमाला गर, ठाढ़े मण्डल प्रमदागन की ।
मनु कमला रति सुषमा वारी, केशर सहित भ्रमर घमड़न की ॥
दीप श्रेणि नैनन हेरन की, उपमा सर नहिं बैन निभन की ।
मनहुँ कमोदिन विपिन प्रफुल्लित, मुद सर युगल चन्द दरसन की ।
आज दिवारी राज मनाई, बजी बधाई छोरनि घन की ।
'कृपानिवास' सियराम निछावरि, पाई चाही अपने मन की ॥

भोग-पद ३

जनकलली को पूजति हट री ।

सुघर सखी सब साजि सौज लै, जुरि आई छवि सागर तट री ॥
 घेवरि पापरि बड़े पकौरे, गुझिया भुजिया भुंजन ठठरी ।
 मेवा मगद मिठाई मिसरी, मीठी और सलौनी मठरी ॥
 गावति मंगल नाचति दुरि-दुरि, मुरि-मुरि लचकति झीनी कटरी ।
 नूपुर किंकिणि भूषण की धुनि, छाय रही तन फरकत पट री ॥
 करति आरती प्रमुदित प्रमदा, केलि कौतूहल विपुल प्रगट री ।
 'कृपानिवास' श्रीजानकिवर की, पाई खुली रहस की गठरी ॥

पद ४

सजनी रजनी लसत लुनाई ।

कनक भवन में दीपमालिका, जगमग ज्योति जगाई ॥
 गुल्मलता तृण द्रुम तरु कानन, दीपक मणि वित छाई ।
 वेदी आलवाल सर वापी, दीपति कूप तलाई ॥
 मग जंगला राजिन पर राजत, गोपुर अति द्युति पाई ।
 अटा कंगूर कुम्भ छज्जन पर, मणि दीपावलि भाई ॥
 ध्वजा पताक पिधान वितानन, दीपकमणि रुचिराई ।
 गोक झरोख ताख तोरण पर, अजिर सरस कर झाई ॥
 दीपमालिका भवन चौक बिच, मण्डप अति रुचिराई ।
 आस पास अलि अवलि विराजत, मध्य सिया रघुराई ॥
 चँवर छत्र विजनादि सिंहासन, सौजे पट समुदाई ।
 भूषण दीपक मणिमय राजत, साजत दश दिशि ठाई ॥

चौपर अघ सतरंज गञ्जीफा, नरद सखी सब लाई ।
 खेलत मध्य सिया रघुनन्दन, हारे वित्त लुटाई ॥
 कौतुक विविध करत अलिगन सब, क्रीड़ा रस समुदाई ।
 नृत्यत गान स्वांग बहु लावत, हाँस रहो अधिकाई ॥
 विपुल खिलौना छूटत वारुदी, आकृति गुण बहुताई ।
 'रसिकअली' यह युगलकेलि लखि, बहु रति मदन सिहाई ॥

पद ५

रैनि दिवाली की द्युति नीकी ।

अधिक प्रकाशित आज रामगृह, शशि द्युति लागत फीकी ॥
 चंग पतंग गुब्बारे कृत्रिम, खग मृग कलित मणी की ।
 उड़त अकाश प्रकाश सकल दिशि, जनु रवि चन्द अनी की ॥
 बहु सखि गावत नृत्य करत बहु, बाजे रंग रली की ।
 रंग भरि निरखत प्रीतम प्यारी, वलि-वलि 'रसिकअली' की ॥

पद ६

देखु सखी भलि रैनि दिवारी ।

खेलत चतुर रंग भरि चौपरि, दशरथनन्दन जनक कुमारी ॥
 दीप पंक्ति चहुँ ओर विराजित, अलिगन अंग सरस उजियारी ।
 विपुल कला गुन निपुन विहारिणि, तैसे सुन्दर अवधविहारी ॥
 विमलादिक पिय ओर भई हँसि, सियदिशि चन्द्रकलादिक नारी ।
 हास विलास परस्पर सरसत, दरशत रसिक प्राण वलिहारी ॥
 यह सुख साज समाज प्रसंसित, होत परम सुख दाव सँभारी ।
 जीती श्रीमिथिलेशनन्दिनी, 'युगलप्रिया' पिय तन मन वारी ॥

पद ७

सखि रैनि दिवारी प्यारी ।

चहुँदिशि दमक रही दीपावलि, महामनिन उजियारी ।

प्राण प्रिया परिकर समेत, रघुलाल ललित छवि धारी ।

खेलहिं चौप चाव संयुत बहु, भाँति जुवा हिय हारी ॥

श्रीसिय तरफ भई अलिगन बहु, लाल ओर दुति वारी ।

मची महामुद दोह द्यूत वर, एक एक ललकारी ॥

चतुर चारु चूड़ामणि रघुवर, हारे हरष हजारी ।

‘युगलअनन्यअली’ जीती जय, श्रीमिथिलेश दुलारी ॥

पद ८

अवध सोहावनो साँझी आज ।

यह साँझी तिहुँपुर उजियारी, कोटिन शशि दुति वारे लाज ॥

पासा साजि-साजि नयनागर, खेलत मन धरि बाज ।

‘श्यामसखे’ चलो निरखिये नागरि, तजि अपनो घर काज ॥

पद ९

आज यह साँझी भली बनियाँ । चलो देखी सहेली अवध गलियाँ ॥

महलन की खिरकी झरोखा झरी । हीरा लालन की मालन की दीपै धरी ॥

अवघट उपवन वन वाग बने । धरे बाती कपूर फनूश घने ॥

लाखों करोरन को दान हुआ । खेले नारी बिहारी दिवारी जुआ ॥

सुर विमान ‘श्यामसखे’ देखैं खड़े । सुख साँझी अयोध्या अनन्द भरे ॥

पद १०

दीप महल राजत सियवल्लभ, अलिन सहित अति मोद भरे ।

खण्ड पचीस अटा के ऊपर, देखत चहुँदिशि घूमि खरे ॥
 अगनित महल पुरी मधि सुन्दर, दरसत सब पर दीप बरे ।
 जल थल गगन दीपमय जगमग, देव विमाननि सुमन झरे ॥
 दीपमाल छवि देखि कुँज बिच, बैठे कोमल फरस परे ।
 रतन जटित चौकी के ऊपर, सतरंज चौपर अलिन धरे ॥
 हरषि परस्पर खेलन लागे, पिय प्यारी निज दाव अरे ।
 साज समूह बजाये हेली, रसमय मृदु स्वर गान करे ॥
 हार जीत दुहुँओर बराबर, उरझे अंगनि छवि उघरे ।
 'प्रेममोद' सिय ओर अंत में, विजय दाव सुख रस सुढ़रे ॥

पद ११

चलो सखि दीप महल छवि देखैं ॥
 पिय प्यारी तहँ चौपर खेलैं, हार जीत मन तोखैं ।
 अबकी गये बरिस लौं सजनी, होइहैं सोच विशेखैं ॥
 अंगनि अंग मिलाय पिया के, अपनो जीवन लेखैं ।
 'प्रेमलता' अभिलाष पूरिहैं, युगल सु छवि हिय रेखैं ॥

पद १२

निरखु सखि दीपन की छवि छाई ॥
 अवधपुरी प्रतिमहल गलिन की, शोभा बरनि न जाई ।
 सप्तकोट के नवल सिखर पर, जगमग जोति जगाई ॥
 अलनि सहित चढ़ि उच्च महल ते, देखत सिय रघुराई ।
 जल थल व्योम दीपमय राजत, 'प्रेमलता' मन भाई ॥

पद १३

अलि अजब अनूप दिवाली ॥
 दर दर दुति दमकति दीपावलि, घर घर वर खुशहाली ।
 चन्द्रकला श्रीचारुशिलादिक, द्यूत रहस मतवाली ॥
 चाव भाव भरि दाव लगावत, पिय प्यारी वनमाली ।
 विजय विलोकि सीय की 'मधुरी', हर्षि बजावति ताली ॥

पद १४

आज दिवाली दिन सुखकारी ॥
 अवधनगर चहुँ डगर बगर में, छाये रही अतिशय उजियाली ।
 शोभा निरखन को प्यारी संग, प्रीतम चलिये कनक अटारी ॥
 चौसर खेलन को मनभावन, श्रीसियजू की भई है तैयारी ।
 'सियाअली' चलि सुख बरसाइये, हिलि मिलि के दोउ प्रीतम प्यारी ॥

पद १५

आज है सखि रैन दिवारी ।
 हाट बाट बहु ठाट रोशनी, जगमग महल अटारी ॥
 चौसर खेलत कनक भवन में, अवध छयल सिय प्यारी ।
 पासा फेंक मार पौवारह, जोती जनक दुलारी ॥
 वार वार हारत रघुनन्दन, सखिन बजावत तारी ।
 हास विलास करत सखि 'सुन्दर', रैन बीति गई सारी ॥

युगल झाँकी

पद १

अति छवि जनकलली की अलकैं ।
चिकनारी कारी घुँघुरारी, चन्द्रवदन पर झलकैं ॥
झूमि रही नागिन सी दोउ दिशि, देखि थकित भई पलकैं ।
'सूरकिशोर' लाल दशरथ को, देख देख मन ललकैं ॥

पद २

सखिन मधि राजति जनकलली ।
अलिंगन कुमुदकली सी भ्राजहि, सिय जनु चम्पकली ॥
शशि वदनी रमणी रघुवर की, सुषमा वेलि फली ।
जाकी छवि निहारि प्रीतम की, एकटक मति न चली ॥
अंसन भुज धरि जासु कुमर नित, फिरत अशोक गली ।
'रसमाला' मेरे मन भावति, सिय विश्राम थली ॥

पद ३

बढ़ौ नित जनकलली को भाग ।
कनक भवन स्वामिनी सखिन बिच, रही जोति ज्यों जाग ॥
जाको जस गावहि विधि नारद, सारद शिव शुक काग ।
सो प्रभु जाकी भौंह निहारत, पग्यो प्रेम के पाग ॥
जाके सकल अंग अंगन में, लाग्यौ अचल सुहाग ।
'रसमाला' चिरजिवो लाड़िली, मिलि पिय के अनुराग ॥

पद ४

सिय छवि वरनि सकै कहु कौन ।

उमा रमा शारद गणेश श्रुति, शेष रहे धरि मौन ॥
हम नित निरखि विचारि यही छवि, राखि सुखी उर भौन ।
उपमा कहूँ न लही तिहुँपुर में, सिय सम कीजिय जौन ॥
हम सबहुँन अनुचरी जानि हँसि, चितै रहति दृग कोन ।
'रसमाला' सिय वदन निरखि छवि, वारहु राई लोन ॥

पद ५

सियाजू मोहि भरोस तिहारो ।
नातो मिथिला नाम ग्राम को, और न हेतु हमारो ॥
सुनु मिथिलेशकुमारि लड़ैती, आपन विरद सम्हारो ।
'मनभावन' की यही विनती है, चरणन से जनि टारो ॥

पद ६

हमारी हो स्वामिनि सियजू ।
कृपा खानि मुसुकानि मनोहर, वसि करनी पियजू ॥
चन्द्रकलादि अली गुन आगरि, नागरी प्रियजू ।
बसहि सदा जब कृपा करहि निज, 'युगलप्रिया' के हियजू ॥

पद ७

जय श्रीसीय पद प्रिय घूरि ।
विशद बोध विनोद वल्लभ रसिक जीवन मूरि ॥
अखिल रुज नाशक प्रकाशक कंज मंजुल सूरि ।
प्रीति परम परेश पावनि दायनी जस भूरि ॥
अमल कोमल लशत संतत सहज सरस हजूरि ।
'युगअनन्य' विशेष सर्वस सकल विधि निधि पूरि ॥

पद ८

बोलनि ललित लड़ै तीजू की ।

श्रवन सुनत सानन्द रसिक पिय, जिय रुचि चारु चौगुनी नीकी ॥
मधुर रसाल सुधा सित शत गुन, सरल सुभग भूषन रस तीकी ।
अतिहिं अमोल अलोल लगन मन, मनन करत लागत कुल फीकी ।
मंगल सदन बदन बिच राजत, जनु शशि महँ शुभ सुमन अमी की ॥
'हेमलता' वानी रस सानी, जीवन जड़ी रसीले पीकी ॥

पद ९

स्वामिनी तोर सुहाग मनाऊँ ।

श्रीमिथिलेश किशोरी सेवा जब जब यहि जग आऊँ ॥
अतर फुलेल अरगजा सुन्दर पिय प्यारी उबटाऊँ ।
बीरी सरस लगाइ पवाऊँ रस की बैन सुनाऊँ ॥
प्रीतम सों नित लाड़ लड़ाऊँ टहलिनि होइ अपनाऊँ ।
'श्यामसखे' दरबार रहूँगी जूठन आस धराऊँ ॥

पद १०

सियाजू के अरुनारे दोउ तरवा, मानहुँ अनुरागिन के घरवा ॥
का गुलाब का कमल कंटीलो, का बड़ लाल अनरवा ।
का कुसुंभ जल बुंद परत हीं, बिगरत रंग निचोरवा ॥
का मखमल का सिरिस कलँगी, का मालती पतरवा ।
इनकी कोमलता के आगे, का कपोत बटपरवा ॥
ऊरध पदुम कल्पतरु अंकुस, रेखन की उजियरवा ।
एक एक रेखन पर वारौं, त्रिभुवन को सिंगरवा ॥

जिनके धोवत डरत देवता, जिमि चुई परइ अतरवा ।
इनसे लगन नहीं तो विरथा, दंड कमंडल करवा ॥

पद ११

सियाजू रानिन में महारानी, और सबै रौतानी ॥
चितवत भौंह खड़ी कर जोरे, इन्द्रानी ब्रह्मानी ।
गौरा पान लगावत रचि रचि, रमा पवावत आनी ॥
आठौ सिद्धि खड़ी कर जोरे, नवनिधि मनहुँ बिकानी ।
कोटिन ब्रह्माण्डन की प्रभुता, रोम रोम अरुझानी ॥
जो माया एकै घाटै पर, सबहिं पियावत पानी ।
सोउ चाहत जाकी करुना को, बार बार सनमानी ॥
जा बिनु पातौ हिलि न सकत जो, सब घट माह समानी ।
संत जनन की इष्ट 'देवता' राम प्रिया जग जानी ॥

पद १२

यह जनकलली को ध्यान है ।

राम उपासक सुचि संतन को, सर्वसु जीवन प्रान है ॥
क्रंचन रचित सुभग भद्रासन, मोतिन की लहरान है ।
तापर बैठी चन्द्र जोति सी, आनन चन्द्र समान है ॥
लाल चरण तल लालै करतल, लाल वसन परिधान है ।
अंग अंग लखि परत मनोहर, भूषण की झमकान है ॥
दोउ कर कमलन कमल विराजत, सखी खवावत पान है ।
चँवर दुरत गृह महँमहँ महँकत, बाजत 'देव' निसान है ॥

पद १३

जानकी छवि की मैं बलिहारी ।

पहुँचि न सकति नजरि जहाँ श्रुति की, तहँ का करिहि विचारी ॥
 चन्द सुरुज तारागन दामिनि, दुति कालन की मारी ।
 मानिक रतन कवनि गिनती में, लछिमिउ अनरथ कारी ॥
 जाकी उपमा खोजि खोजि कै, शारदहूँ हिय हारी ।
 जाकी तनिक रेख सियवरहूँ, भाल तिलक मिस धारी ॥
 स्वयं प्रकास नई जो दिन दिन, जाकी जग उजियारी ।
 राम'देव' की जान जानकी, परम प्रेम की वारी ॥

पद १४

सियाजू की सर कर सकत न राम ।

याको न्याव करहि बेलागी, इहाँ न हठ को काम ॥
 जनक देवैया राम लेवैया, काको ऊँचो धाम ।
 जग में प्रथम सिया कहि पाछे, परत राम को नाम ॥
 श्रीपद ही से सबकी शोभा, सो श्री सीय ललाम ।
 सीय चरित ही धरे राम पर, रिषि की यही कलाम ॥
 केस सँवारन पद धोवन में, को छिपि बनत गुलाम ।
 'देव' रहस्य समुझि मन सुमिरहु सिय को आठो जाम ॥

पद १५

किशोरीजी राखि शरण मोहि लीजै ।

दीन दयाल प्रणत हित पालक, अवगुण चित नहि दीजै ॥
 तुम सम हितू नहीं जग मेरो, अरज कान सुनि लीजै ।
 'अली वृषभानु कुँवरि' बिनवत हैं, आपनो कर गहि लीजै ॥

पद १६

सियजू के दृग छवि नित नवीन ।

अंजन मिस रंजन मन पिय लखि, श्याम सु डेरा कीन ॥

गौर अंग अरुणाम्बर झीनहुँ, कहि न सकत गति झीन ।

छिन छिन छटा घटा रस बरसत, चित चातक रस लीन ॥

नित संयोग वियोग न सपनेहुँ, निज मुद खुद लै लीन ।

कृपा साध्य गुरु 'युगलविहारिनि' जानहि रसिक प्रवीन ॥

पद १७

प्रियांजू के नेह भरे दोउ नैन ।

अंजन जुत रंजन मन रंजन, अलिंगन के सुख दैन ॥

खंजन मोर मीन पंकज दल, दुरि वन कोउ जल सैन ।

रती कहैं मैं अहाँ रती भरि, मैं कहैं सम मैं न ॥

उमा रमा ब्रह्माणि आदि सब, तौली सुमति तुलै न ।

श्रीमथिलेश कुमारि प्यारि पिय, उपमा तो कहूँ है न ॥

जेहि दिसि हँसि दरसत सरसत मुद, बरनत बरनि बनै न ।

'जुगल विहारिनि' जानत प्रीतम, जे निरखत दिन रैन ॥

पद १८

किशोरीजू के अनुपम रसमय वैन ।

सुधा सुधाकर शुक पिकहुँ नहि, कोकिल हूँ सम है न ॥

मंद हँसनि रद लसनि अधर छवि, फँसनि पिया प्रद चैन ।

अंग अंग छवि फवि कवि दवि मति, शारद बरनि सकै न ॥

करत विहार अपार पिया संग, कनक भवन सुख दैन ।

'जुगलविहारिनि' भरि उमंग सखि, सेवति हैं दिन रैन ॥

पद १९

स्वामिनि सियजू हमारी फिकिर मोहि काहे की ।
 जाके ससुर महीपति दशरथ, स्वामी श्रीअवध विहारी ॥
 देवर भरत लखन रिपुसूदन, खास दास त्रिपुरारी ।
 नैहर मिथिला राज विराजे, अवधपुरी ससुरारी ॥
 रिद्धि सिद्धि चरनन पर लोटै, हनुमत पाँव पुजारी ।
 'प्रेमलता' कलियुग का करि हैं, स्वामिनि लीहैं सम्हारी ॥

पद २०

हमारी स्वामिनी वह हैं जो सब रानिन में महरानी ।
 सदा सेवैं जिन्हें सुर नारिनी, निज कारिनी जानी ॥
 धनद की छत्र लै छाजै, झलै मुरछल वरुण वाली ।
 सुघर कर चौंर ले निशि दिन, उड़ावैं भौर इन्द्रानी ॥
 रमा वीरी खवावतु हैं, उमा लै इत्र तन लेपैं ।
 गहे वीणा सभी में जिसके, गुन गावत हैं ब्रह्मानी ॥
 करोड़ो किन्नरी इत उत खड़ी, करजोर मुख जोहैं ।
 करे रति हर्ष युत जिसके, जड़ी जूती की सेवकानी ॥
 कहैं 'हरिजन' कहाँ तक है, विदित सब श्रुति पुराणों में ।
 सकल ब्रह्माण्ड नायक की, वही हैं एक सुखदानी ॥

पद २१

हमारी सिया सुन्दरता की सीमा ।
 अंग अंग प्रति कोटि रमा रति, वारैं निरधक ही मा ॥
 मुख छवि निरखि चन्द्र नभ में गये, भ्रमत लाज दुख जी मा ।

पिय की जीवनि मूरि सजीवनि, छन विछुड़त दुख भीमा ॥
 वारत राई लोन छिनहिं छिन, वारि उतारत पीमा ।
 लखि 'रसमोद' सुअंग माधुरी, पान करत न अधीमा ॥

पद २२

हौं सहचरी मिथिलेशलली की ।

पिय प्यारी सनेह सुख सरि महँ, विकसन चहौं नित प्रेमकली की ।
 श्रीकौशिला सुवन सुन्दर संग, विहरन प्यारी सुवन थली की ॥
 यह रस स्वाद मगन रहौ निस दिन, जानो नहीं कछु सुगति भली की ।
 जन्म-जन्म चेरी भयो चाहत, यहै साध उर 'प्रेमअली' की ॥

पद २३

प्यारीजू तिहारी चन्द्रानन पर, प्रीतम नयन चकोर किये री ॥
 एक पलक टारन नहिं चाहत, निरखत हैं भुज अंश दिये री ।
 तृप्ति न मानत कबहुँ रसिकवर, रूप सुधा रस पान किये री ॥
 धनि धनि भाग सोहागिनि तेरो, धनि यह सुख सरसात हिये री ।
 'सियाअली' यह स्वाद महारस, तेरी कृपा बिनु कौन पिये री ॥

पद २४

मोहि तो भरोसो सियाजू रावरी चरण को ॥

प्रेम राशि बसत सों पदतल रजकण, कौशलकिशोर मन मूरि
 सो हरण को । तव पद तरवा तरणि की किरण मेरे, कब उगिहैं
 उर मंगल करण को ॥ सार रस रूप नित सुख जहँ सरसत,
 शुभ गुण खानि भक्ति उर आभरण को । नेकु नेह करत निहाल
 होत जन जिय, विरद उदार बिनु कारण भरण को ॥

पद २५

एहन पतित केर अहीं पति राखब हे महरानी सिया, अहीं के
चरणमां के आस ॥ करम धरम हम किछियो ने कयलहुँ हे म०,
सब दिन सोहायल सुख विलास ॥ मिथिला नगरिया बीच भेल
मोर जनमुआँ हे म०, एकरे भरोसा वो विसवास ॥ विधि
हरिहर सुर नर मुनि किन्नर हे म०, एहि ठाम मेटौलनि हिय के
आस ॥ अहीं पर 'स्नेहलता' आशा लगाओल हे म०, दिय
सिय पग में निवास ॥

पद २६

स्वामिनी पद पंकज की ओर लगी है आशाओं की डोर ॥
अन्तर की तुमहीं सब जानो, प्यासे हियहूँ को पहिचानों, करो
कृपा की कोर ॥ प्रीति रीति की बेलि पुरानी, सूख रही पाये
बिनु पानी, सींचिय अमी बहोर ॥ स्वामिनी सहज स्वरूप
सम्हारो, जानि अबोध न मोहि बिसारो, ना अब हाथ सिकोर ॥
युगल स्वरूप सदा हिय ध्याऊँ, रसना से रसमय गुन गाऊँ,
करि दीजै रस बोर ॥

पद २७

सब गुन खानि हमर छथि स्वामिनि, हम छी जनक दुलारी के ।
बल भरोस दोसर नहिं हमरा, बहिन सिया सुकुमारी के ॥
जिनकर रुख राखथि छनहीं छन, देखियौन अवधविहारी के ।
अमित कोटि ब्रह्माण्डक प्रभुता, विवश भेल छथि प्यारी के ॥
व्यर्थ आब हम करब कि चिन्ता, गहि पकरल मुद भारी के ।

प्रति पल सुरति लागल चरणन में, प्रीतम प्राण पियारी के ॥
 दिव्य भूमि में जन्म हमर थिक, कोखि सँ मिथिला नारी के ।
 खास बहिन निज चन्द्रकलाजू, मुख्य सहेली प्यारी के ॥
 जिनक सु दृष्टि पाबि सब अलिगन, सेवथि राजदुलारी के ।
 'पद्मलता' लघु बहिन लली के, सारी रसिकविहारी के ॥

पद २८

आहाँक कृपा बिनु सुनु सिय स्वामिनि, निर्मल मति हम पायब कहाँ सौं
 निज बुधि बलक भरोस नै रंचहुँ, चरण कमल गुण गायब कहाँ सौं ॥
 बन्दि रसिकजनसुयश बखानल, से शुभ गुण हम पायब कहाँ सौं ।
 काँच किरिच उर धारण करि हम, मणि मुक्ता झहरायब कहाँ सौं ॥
 अवगुण हमर नै हेरब स्वामिनि, कपट भरल छी गनायब कहाँ सौं ।
 'पद्मलता' लघु बहिनी अहीं के, नाता दोसर लगायब कहाँ सौं ॥

पद २९

सियाजू सुख की खानि—पिया की मन्द-मन्द मुसुकान ॥
 अगणित भूषण वसन लसैं दोउ, नवल निकुँजन बीच बसैं दोउ,
 दीनन के हित फेंट कसैं दोउ, बावरि सखियाँ देखि हँसैं दोउ,
 रसिकन के मेहमान ॥
 नित नई होत झरोखन झाँकी, श्यामसुन्दर सियाजू की बाँकी,
 कौन सी बात कहौं उपमा की, वे नैना जाने जिन झाँकी,
 जिन लीन्हौं पहिचान ॥

पद ३०

मो पै रस की चितवनि डारी हो दशरथजू के लाल ॥
 कटि पीताम्बर धोती सोहैं, लाल पाग शिर न्यारी ।
 तापर तुरी अधिक मनोहर, मोतियन झालरदारी ॥
 विहरत फिरत प्रमोद विपिनि में, श्याम वरण मनहारी ।
 नाशामणि की लटक चाल पर, 'युगलप्रिया' बलिहारी ॥

पद ३१

धनुहियाँ वारो श्याम हमारो प्रान ।
 डोलत बन प्रमोद बिच सजनी, मन्द मन्द मुसकान ॥
 शीश जड़ाऊ पाग लसत अति, मोती कुण्डल कान ।
 जगमग द्युति मनहरत सबन के, नाशामणि चमकान ॥
 वक्षस्थल नाभी रोमावलि, कटि प्रदेश सुखदान ।
 पीत वसन युत युगल जंघ वर, जानु पुष्ट परिमान ॥
 नखद्युति अमल कमल कोमल तल, उपमा अरु उपमान ।
 'युगलप्रिया' सब घटित लली अंग, अनत नहीं यह शान ॥

पद ३२

ये छवि पर वारों अमित वर चन्दा ॥
 श्याम गौर भुज अंश दिये हैं, लसत सखिन सुखकन्दा ।
 हँसत मन्द बतरात परस्पर, चितवनि में जनु फन्दा ॥
 रूप रसिक रस छके युगल मिलि, ज्यों मधुकर मकरन्दा ।
 'अग्रअली' के प्राण जीवन धन, जनकलली रघुनन्दा ॥

पद ३३

जिया परिगै नयन के फेरे में ।
 वशीकरन है जादू टोना, मन्द मन्द हँसि हेरे में ॥
 काह कहूँ कछु कहत बनै नहिं, घेरि लियो छवि घेरे में ।
 मिलत नयन जिय तरफ जात है, तिरछी तकनि तरेरे में ॥
 छाये रही दृग श्याम मुरतिया, विलग न साँझ सबेरे में ।
 सब विधि शरण सियाजू की रहिहौं, 'रामचरण' के नेरे में ॥

पद ३४

पिया बाँधी कटारी तैने आँखन में ।
 तेरी अदा जोग अवनी पर, नजर न आवे कोई लाखन में ॥
 जप तप संयम योग समाधी, नेम धरम सब ताखन में ।
 'शीलमणी' तेरे नैना रसीले, कर कतलान कियो खाकन में ॥

पद ३५

प्यारी लागे वो ललन तेरे, वदन की लुनाई ।
 जुलफन युत सुन अवध साँवरे, नैनन रही समाई ॥
 वारों मुकुर कपोलन ऊपर, अधर बिब अरुणाई ।
 'रामसखे' छिन पल बिन देखे, जिय नहिं परत रहाई ॥

पद ३६

मधु रसवा चुवै तेरो आँखन में ॥
 जादूगर जालिम जग जाहिर, जीत्यो सकल जमातन में ।
 कलित कलाकर कोष काम घन, चपला चटकि छियो छन में ॥
 बड़े दिमागदार हो दिलवर, सबको दरद देत छन में ॥

‘युगलअनन्यअली’ मन फँसि गयो, यह तेरी मुर मुसुकन में ॥

पद ३७

सजीवन जीवन युगल किशोर ।

रैन ऐन मुद मैन चैन चय, चखत चतुर चितचोर ॥

हँसत हँसावत होश जोश विन, वोस लेत रस बोर ।

सुधि बुधि बिशद विहाय छाया छवि ह्वै रहे चन्द चकोर ॥

आस पास सहचरी सोहागिनि, सिखवहिं मदन मरोर ।

‘युगलअनन्यअली’ रसिया दोउ, उरझि रहे निशि भोर ॥

पद ३८

निरमोहिया से लागी लगनियाँ रे ॥

जागत जतन जुगुति पर दूनी, ऐसी विरह अगिनियाँ रे ।

नाहक सीख देति हौ हमको, डसि गई नेह नगिनियाँ रे ॥

ना जानो केहि देश विलमि रहे, ठगि लियो कौन ठगिनियाँ रे ।

‘युगलअनन्यअली’ प्रीतम हित, सब विधि भई जोगिनियाँ रे ॥

पद ३९

युगल छवि आज अनूप बनी ।

कनक भवन श्रृंगार कुँज में, बैठे बनी ठनी ॥

कोटिन सखि सहचरी अमित लिये, ठाढ़ी सौज घनी ।

‘रसिकअली’ उर यह समाज बसो, लीला ललित मनी ॥

पद ४०

युगल छवि देखे नयन सिरात ।

जनु सुषमा सर मध्य लसत अति, नील पीत जलजात ॥

वदन किधौं छवि नगर वसत तेहि, सम्पति विविध लखात ।
लेत चोर चित को जब मृदु हँसि, करत परस्पर बात ॥
विहरत कनक भवन गृह आँगन, कबहुँ अटन चढ़ि जात ।
रूप भरी रस भरी चतुर अति, संग सखिन की व्रात ॥
कबहुँ बैठि चौपरि खेलत दोउ, हार जीत पक्षपात ।
देखत फिरत 'रसिकअली' तहँ तहँ, जहँ जहँ प्रिय दोउ जात ॥

पद ४१

बसो मेरे नैनन में सियलाल ।

चपला घन कंचन मरकत द्युति, राजिव नैन विशाल ॥
कोटि कोटि रति मदन विमोहत, अद्भुत रूप रसाल ।
राजत कनक भवन में 'रसिकअलि' संग रंगीली बाल ॥

पद ४२

देखो री छवि राम वदन की ।

कोटि कोटि दामिनि दर्पण दुति, निदत कांति कपोल रदन की ॥
नासामणि मुसक्यानि माधुरी, मन्द करी अति गुमर मदन की ।
फवि रहि मुक्त मुकुट झालर शिर, मनहुँ पास दृग मीन फँदन की ॥
चोरति चित्त बंक दृग चितवनि, जुलफन छुटकनि खौर चन्दन की ।
'रामसखे' पिय मधुर गान सुनि, सुधि न रहत तन वदन सदन की ॥

पद ४३

लगन लगी जब कौन डरै डर ।

सब संशय मिटि जात सखी री, वदन विलोकि मीत अपने कर ॥
स्वाती बूँद पपीहा चाहत, यद्यपि भरे अगम सरिता सर ।

करुणा भरे खड़े घर वारे, रोवत सती मशान चढ़े सर ॥
 लोक लाज कुल कानि तबै लौं, जब लौं प्रेम रसी न फँसी गर ।
 'प्रेम सखी' अब झगड़ो कवन है, यह तन बेच्यो अवध छयल कर ॥

पद ४४

बसौ यह सिय रघुवर को ध्यान ।
 श्यामल गौर किशोर वयस दोउ, जे जानहुँ के जान ॥
 लटकत लट लहरत श्रुति कुण्डल, गहनन की झमकान ।
 आपुस में हँसि हँसि के दोऊ, खात खिवावत पान ॥
 जहँ वसंत नित महँ महँ महँकत, लहरत लता बितान ।
 बिहरत दोउ तेहि सुमन बाग में, अलिकोकिल कर गान ॥
 यह रहस्य सुख रस को कैसे, जानि सकै अग्यान ।
 देवहुँ की जहँ मति पहुँचत नहिं, थकि गये वेद पुरान ॥

पद ४५

अब हम भईं सोहागिनि साँची ।
 कृपा करो कोशलपति प्रीतम, मधुर मोहब्बत माँची ॥
 बिसरी विषय विभूति वासना, नाशी जग मति काँची ।
 नूतन नेह बाँधि नूपुर पद, परा प्रीति युत नाँची ॥
 साधन सकल निवारि नेम करि, युगल नाम सन राँची ।
 'युगलअनन्यशरण' सीतावर, रहस भावना याँची ॥

पद ४६

प्रीतम तोरे नयना हो, मेरो बरबस मन हरि लीना ॥
 श्रवण सलाह उदार दार लगि, प्रतिक्षण लक्ष नवीना ॥

शोभा सार मार मारक झख, कंज खंज मृग मीना ॥
रैन ऐन नहिं चैन लखे विनु, वावरि पाँवरि कीना ।
'कोविद' परमानन्द गाइये, अद्भुत कुत दुःख दीना ॥

पद ४७

पिया प्यारे के नैना बड़े बाँके ।
चितवत ही घायल करि डारत, पुरत न धाव मल्हम टाँके, पल
परत न चैना । छीन लेत कुल कान छिनक में, मारत मनहुँ
मदन डाँके, सरवस हर लैना ॥ मद माते रसिकन रस राते,
छवि छाके अनु उपमा के मोहन मन मैना । जेहि जन 'मौन'
लगी सोई जाने, मृदु मुसक्याय झमक झाँके, कासों कहौ बैना ।

पद ४८

बिन देखे नयनमाँ ना माने हो ॥
जब से लखी माधुरी मूरति, रूप रसिक दृग दीवाने हो ।
मुख सरोज मकरन्द पान कर, जनु मधुकर मन मस्ताने हो ॥
जिमि शशि ओर चकोर विलोकत, रूप सुधा रस चसकाने हो ।
अहह सुजानराय पिया तुम बिन, कौन 'मौन' मन की जाने हो ॥

पद ४९

जिय मारो पियरवा की माधुरी हँसन ।
कोटि काम छवि धाम राम अंग, पीत वसन घन तड़ित लसन ॥
तरपि रहे तुरी कलंगी शिर, जुलुफ जाल मन मीन फँसन ।
महा पीर कसकत नहिं निकसत, नाशामणि की मन्द हलन ॥

पद ५०

घूँघरवारी अलक हिय हर गई ॥
 अति प्यारी बाँकी भँवरारी, सघन सचिक्कनकारी कपोलन ढर गई ।
 राजिव नयन विलोकन बाँकी, मानहु मदन कटारी कतल जिय
 कर गई ॥ चन्द्रवदन मुसुक्यान माधुरी, मदन मोहनी डारी,
 फांस गले पर गई । 'मौन' मुदित मन अवध छयलकी, मूरति
 मधुर निहारी, दृगन में भर गई ॥

पद ५१

युगल छवि जोहन जोग अली ।
 अति मन हरन लाल दशरथ के, सोइ मिथिलेश लली ॥
 नील कमल सम छटा राम की, सिय जनु चम्पकली ।
 दम्पति वदन विलोकि चन्द्र सम, जीवत 'मधुरअली' ॥

पद ५२

छवि अति बाँकी हमारे हिय बस गई ॥
 तन घनश्याम लसत पीताम्बर, जनु चमकन चपला की,
 लिपटि कटि कसि गई । जनु शशि ओर चकोर तोर तृण,
 वदन सु चन्द्रकलाकी, रूप रस फँस गई ॥ अंग अंग
 अवलोकि मधुर छवि, कोटि मदन सुखमा की, गरुरत
 खस गई । 'मौन' मुदित छवि अवध छयल की, झमक
 झरोखन झाँकी, दृगन मग धँस गई ॥

पद ५३

चित चोरन छवि रघुवीर की ॥

वशी रहत निशि वासर हिय में, बिहरनि सरयू तीर की ।
जरकशी पाग तिलक मृग मद की, तापर कलंगी हीर की ॥
उर मनिमाल पीत पट राजत, चलन मत्त गज धीर की ।
'प्रियासखी' लखि अवध छयल छवि, सुधि नहि भूषण चोर की ॥

पद ५४

दृगन भरि छवि लखु सिय रघु वीर ।
कनक भवन राजत प्रिया प्रीतम, श्यामल गौर शरीर ॥
अङ्ग अङ्ग नव रङ्ग रंगे वर, लसत सुरंगी चीर ।
फूल छड़ो प्यारी कर राजत, पिय कर सुचि धनु तीर ॥
नजर वाग अनुराग लाग फल, नटत मोर मन कीर ।
नर देही सुमिरन वैदेही, हेतु वदत मुनि धीर ॥
हृदय पत्र लेखनी प्रीति करु, तत्त्वमसी मुद नीर ।
'जानकिवर' दम्पति छवि संपति, लिख ले सखि तसवीर ॥

पद ५५

गजब तोरी चितवनि अवध विहारी ॥
छूटत बान कमान भौंह ते, जान न आन अनारी ।
उपर न चोट करत उर घायल, हौ तुम अजब शिकारी ॥
भरे सुधा विष मद आँखन में, स्वेत श्याम रतनारी ।
जियत मरत झुकि परत अचानक, जेहि 'बलदेव' निहारी ॥

पद ५६

साँवरे सलोने जू से नैना मोरी लागि गये ।
नैनन में नैन सों जुलुफ घुंघुरारे कारे, अधर सों अधर पीवत

रस जागि गये ॥ करज सों करज हिया सों हिया गये गसि,
लोक परलोकहूँ के सुधि सब भागि गये ॥ किंशुक गुलाब कली
चली रसकेलि गली, निस दिन जाने नहीं झनन झनकि गये ॥
'नवलअली' सुघन दामिनी परसपर, अरध उरध रस वस रस
पागि गये ॥

पद ५७

रैन दिन हिय कसकत है, प्यारा नयन की गाँसी ।
जब से आय लगे उर मेरे, आवत साँस उसाँसी ॥
प्राण हमार चलन चाहत है, तोको लगत है हाँसी ।
'रामरसिक' प्रिय काहे देत पिय बिनु कसूर के फाँसी ॥

पद ५८

पिया हिया लागि रहो न्यारे नहि जाउ रे ॥
गुरुजन के लाज काज हेरो जनि भोरे पिया, सुमन के सेज सिया
रस बस छाउ रे ॥ पइयां परो तोहि मैं तो निशिपति निश दिन,
राका युत हित नित अवध बसाउ रे ॥ कुलगुरु नित हम पूजन
सु करिहौं, उदय जनि होउ मैं तो दुःख हिया पाउ रे ॥ 'नवल-
विहारी' पिया विछुड़त पिया प्यारी, मरनो सो भलो जनि
जिया पछिताउ रे ॥

पद ५९

हमारे दृगन बसे रघुबीर ।
लोक लाज कुल की मर्यादा, सब तजि भये फकीर ॥
भस्म रमाइ सुमिरनी कर गहि, डोलत सरजू तीर ।

वन प्रमोद की कुंज गलिन में, ढूँढत फिरत अधीर ॥
जुलफन जुत विधु वदन निरखिकै, कब मिटिहैं उर पीर ।
'रसमाला' उर ताप बुझाओ, प्याइ वदन छवि नीर ॥

पद ६०

मारे कलेजे हँसि के तेरे नैना रंगदार ।
घायल फिरूँ मैं घायल फिरूँ मैं घायल, खाये दृग तरवार ॥
मारे पुतरिया काली पुतरिया काली, लाली दृगन खुमार ।
टपकैं सुधा रस अधरन सुधा रस अधरन, 'मोहनि' दिलदार ॥

पद ६१

सँवलिया तेरी कहर करै मुसुकान ।
जो तुव लाल हँसन निरखत है, भूलि जात सब ज्ञान ॥
घूमि गिरत घायल ह्वै छिति में, राखत नहि तन प्रान ।
'मोहनिअली' विदेह लली पिय, त्यागि देहु यह बान ॥

पद ६२

नैन दोउ जहर बुझी तरवार ।
वार करत हिय लहर चढ़त है, ऐसी गजब की धार ॥
बिहवल ह्वै डोलत गलियनमें, तन की न रहत सम्हार ।
'मोहनिअली' करै बस अपने, अवध छयल दिलदार ॥

पद ६३

लाल की अलकैं अतर भरी ।
चारु कपोलन पै इत उत सखि, झूमत हैं बिखरी ॥
कहरकरैं निरखत ही सजनी, वावरि मोहि करी ।
'मोहनिअली' कतल करिबे को, हरदम सान धरी ॥

पद ६४

बिहँसि मोहि मारी नैन कटार ।
 लोनी कुञ्ज लतन में सजनी, अवध छैल सुकुमार ॥
 बसीकरन कोउ मन्त्र सिखा दे, मनिहौं यह उपकार ।
 'मोहनिअली' चलाइ सखी री, बस करिहौं दिलदार ॥

पद ६५

अनोखे छैला मारी हमहि दृग सैन ।
 रहि रहि जिय अकुलात सखी री, आवत नोंद न नैन ॥
 कल नहिं परत धीर नहिं धारत, कसकत हिय दिन रैन ।
 'मोहनिअली' निठुरता त्यागहु, तुम बिन परत न चैन ॥

पद ६६

सँवलिया के नैन किधौं शमशेर ।
 जेहि चितवत घायल करि डारत, करत तनिक नहिं देर ॥
 कहरत गिरत भूमि में तलफत, सिसकत उठत न फेर ।
 'मोहनिअली' आपु मन मृग यह, बरबस होत अहेर ॥

पद ६७

बालम तुव नैना अति नीके ।
 निरखत ही मद छाकी अँखियाँ, उठत काम हिय तीके ॥
 चितवत ही बेपीर चुभत चित, निकसत लेत सु जी के ।
 'मोहनि' एक तुमहिं तजि अब पिय, और लगै सब फीके ॥

पद ६८

ठाढ़ी रे प्रमोद बन अवध दुलारो रे ॥

लटपट चाल अनोखी झाँकी, देखत मन ठगि जात हमारो रे ।
बोलत वचन सुधा जनु बरसत, चितवन में टोना पढि डारो रे ॥
यह निकुँज वन कहँ तू आई, कहि मो तन हँसि नेक निहारो रे ।
'मोहनिअली' सुनै पिय बतियाँ, नैनन तुरत नेह जल धारो रे ॥

पद ६९

गोरे से वदन पर श्याम बिंदुलिया ।
मानहु अलि छौना पंकज पै बैठो है आय लगै छवि भलिया ॥
तापर झीन नील सारी तन, चमकत जनु घन माँझ बिजुलिया ।
'मोहनि' पिय मन जाइ फँस्यो है, लखि पिय की मुसुक्यान रंगिलिया ॥

पद ७०

दोउन की अरुझनि आली मोहि भावै ॥
भुज से भुजन गरे गरबहियाँ, विहँसि विहँसि बतरावै ।
दोउ मुखचन्द्र निहारि परसपर, ललित कपोल मिलावै ॥
उरझि रहे दोउ मुकुट चन्द्रिका, अलियन मुकुर दिखावै ।
'सियाअली' मेरे जीवन धन, छवि पर बलि बलि जावै ॥

पद ७१

सँवलिया मैं तोरे रंग रंगि गई रे ।
'जहँ देखूँ तहँ राम श्याम घन, तन मन रस में पगि गई रे ॥
जो कलु रुचै कहै किन कोऊ, अब तो लगन तोसों लगि गई रे ।
'सियाअली' बेदरदी तेरी, मृदु मुसुकन में ठगि गई रे ॥

पद ७२

निहारे बिनु ना माने नेही नयनमाँ ॥

जब देखौं सरयूतट कुंजन, बिहरत श्याम सजनमाँ ।
 शिर पै ताज श्रवण बिच कुण्डल, घुंघुरारे अलकनमाँ ॥
 यद्यपि चोट सहत चितवनि की, बेधत मृदु मुसुकनमाँ ।
 'सियाअली' मन जाय फँस्यो अब, मानत नाहि कहनमाँ ॥

पद ७३

तोहे राखौं पियरवा मैं केहि विधि से ॥
 हिय बिच राखौं नयन तरसत है, नयन बिच राखौं हिया तरसे ।
 एको भाँति न मन ठहरत है, प्यारे बताओ मिलोगे कैसे ॥
 दृग से दृगन मिलाय साँवरे, हिय से हिया अरु गरे गरे से ।
 'सियाअली' यहि भाँति मिलौ जब, ताप मिटै अंग अंग परसे ।

पद ७४

ऐसोई मन चाहत निशि वासर, अपने प्रीतम प्राण निहारौं ॥
 और ठौर उझकौं नहि नयनन, छिन छिन पियके अलक सँवारौं ।
 पियत रहौं रस युगल माधुरी, हँसि हेरनि में तन मन वारौं ॥
 प्राण सुमन को सनेह ताग में, पोहि उर हार युगल गरे डारौं ।
 'सियाअली' उर लाय प्राणधन, जग नातो सब दूरि करि डारौं ॥

पद ७५

छयल तेरी छवि की गयल में, अब तो मैं आइके हेरानी ॥
 प्रगिया पेंच किधौं कलँगिन में, धौं जुलकैं अरुझानी ।
 धौं तिरछे नयनन की कोरन, धौं यह मृदु मुसुकानी ॥
 पीत वसन अरु कटि की कसन में, धौं दुपटा फहरानी ।
 'सियाअली' हेरत मैं हारी, ना जानो कहवाँ भुलानी ॥

पद ७६

अँखियन बिच तुमको चुराय राखूँ ।
कोटि कहौ तोहि जान न दैहौँ, हियरा से हियरा मिलाय राखूँ ॥
मृदु विहँसनि बाँकी चितवनि में, तन मन अपना रँगाय राखूँ ।
'सियाअली' ए दोउ जीवन धन, सब विधि अपना बनाय राखूँ ॥

पद ७७

बने रहो नीके रहो मेरे प्यारा ॥
प्यारी संग आनन्द करो नित, जीवन प्राण हमारा ।
मिलो न मिलो तुम्हारी खुशी है, तुम सुख से सुख सारा ॥
दूरिहिं से सुनि सुनि सुख पाऊँ, रहती हूँ ताहि सहारा ।
'सियाअली' मैं यहि जग रहिहौँ, नियरे रहो चाहे न्यारा ॥

पद ७८

जिय मानत नाहीं चुभे नैना ॥
अवध छयल छवि छटा लखी जब, तब से नाहिं परे चैना ।
छवि दरसाय देखाय चन्द्रमुख, मृदु मुसुकाय दर्ई सैना ॥
काह कहौं सखि दुख अपनो सब, तरफरात बीती रैना ।
'सियाअली' के हिय बिच सालत, प्रीति भरे दोऊ नैना ॥

पद ७९

साँवरो रस के भरे तोरे नैन ।
जादू की पुड़िया पढ़ि-पढ़ि डारी, नाहिं परत जिय चैन ॥
दिन नहिं चैन रात नहिं निदिया, कासे कहूँ यह वैन ।
जागत सोवत बागतहूँ में, करकत हैं दिन रैन ॥ •

रतनारे कारे कजरारे, अनियारे अति पैन ।
जदपि करत उतपात घनेरो, तदपि 'मधुर' सुख दैन ॥

पद ८०

रसिक दोउ होइ रहे चन्द चकोर ।
भूषण प्रति प्रतिबिम्ब पात तन, श्याम गौर चितचोर ॥
नेह सिन्धु उमगत उर उज्ज्वल, अरस परस रस बोर ।
नाना भाव भेद दरशावत, नयन कोर दुहुँ ओर ॥
सहि न सकत बिनु देखे पल दुःख, बीतत वर्ष करोर ।
'प्रेममोद' बिछुड़े के भय से लिपटे युगल किशोर ॥

पद ८१

मोहे छैला ने मारी नजरिया रे ।
नयनों की घाली मैं इत उत डोलौं, घर की मैं भूली डगरिया रे ॥
तिरछी विलोकन मंद हँसनियाँ, हियरे में मारी कटरिया रे ।
मन अरुझाय गयो अलकन में, तन की रही न खबरिया रे ॥
श्याम रंग में रँगि रही सजनी, मोरी श्यामहु भई चुनरिया रे ।
'बाँके' पिया मोहे कल ना परत है, मन मान्यो सलोनो सँवरियारे ॥

पद ८२

हे रघुवर राजकिशोर तनक हँसि हेरो ॥
वो चन्द वदन मन वाले वो मधुरी विहँसन वाले, वो सांवलिया
चितचोर । प्रीतम अब प्रीति लगा लो, नैनो से नैन मिला लो,
विरहा की उठत मरोर ॥ हम जप तप कछु नहिं कीन्हों, तुव
चरण शरण प्रभु लीन्हों, अब नाथ हमारी ओर । है केवल कृपा
तुम्हारी, नहिं कौनो उपाय 'विहारी' हम विनय करै करजोर ॥

सम्पादक द्वारा सम्पादित पदावली

१—श्रीमैथिली विवाह पदावली 'प्रथम भाग'	४.००
२—श्रीमैथिली विवाह पदावली 'द्वितीय भाग'	७.००
३—श्रीवसन्त विहार पदावली	५.००
४—श्रीजन्मोत्सव बधाई पदावली	यन्त्रस्थ
५—श्रीझूलन विहार पदावली	४.००
६—पञ्च पल्लव पदावली	६.००

पदावली मिलने का पता

- १—स्वामी मैथिलीशरणाचार्य 'वेदान्ती'
श्रीरसिक शिरोमणि मन्दिर, चिरान्द, छपरा, बिहार
- २—श्रीरामदुलारीशरणजी महाराज, बिहारकुण्ड
श्रीजनकपुरधाम, नेपाल
- ३—श्रीद्वारिकाप्रसाद शिवगोविन्द पुस्तकालय
श्रृंगारहाट, श्रीअयोध्याजी